

GEODL – 4

BLOCK -1

UNIT 3

Using and Teaching Language
through Integrated approach

Dr. Priti Gupta

Asso. Prof.

Rajeev Gandhi College,

Bhopal

M. N. 9669969444

Pdgupta76@gmail.com

इकाई 3 समाकलित उपागमों के द्वारा भाषा शिक्षण एवं उपयोग

संरचना

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 लेखन कौशल अर्थ एवं महत्व
- 1.4 लिखित रचना
- 1.5 भाषा की संरचना
- 1.6 पठन शिक्षण के उद्देश्य
- 1.7 मौन वाचन
- 1.8 सारांश
- 1.6 चिंतन के लिए प्रश्न
- 1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

संदर्भ ग्रंथ सूची

3.1 प्रस्तावना

भाषाई कौशलों में लेखन-कौशलों जटिलतम कौशल माना गया है। प्रथम तीन कौशलों में पर्याप्त कुशलता अर्जित कर लेने से ही अध्येय भाषा पर पूरा अधिकार नहीं मना जा सकता, लेखन पर अधिकार कराना भी अन्य भाषा –शिक्षा का महत्वपूर्ण दायित्व है। वस्तुतः चारों कौशलों के प्रयोग की कुशलता प्राप्त कर लेने के पश्चात ही यह कहा जा सकता है कि अध्येय भाग पर समुचित अधिकार हो जाता है। अतः भाषाई कौशलों के शिक्षण के क्रम में लेखन – कौशल का विकास एवं शिक्षण अनिवार्य हो जाता है। इसके बिना भाषा का औपराचिक के शिक्षण अधूरा ही माना जाता है। मातृभाषा में भी वचन तथा लेखन की कुशलता औपराचिक शिक्षा का अनिवार्य अंग है। अन्य भाषा में भी तीनों कौशलों के विकास के साथ ही लेखन का शिक्षण, उसका विधिवत अभ्यास कराना अनिवार्य हो जाता है।

लेखन-कौशल का अर्थ है भाषा –विशेष में स्वीकृत लिपि –प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कुशलता। सामान्यतः प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि –व्यवस्था होती है। इन लिपि-प्रतीकों को वही ही समझ सकते हैं। जिन्हें उस भाषा की लिपि –व्यवस्था का ज्ञान है। इसका तात्पर्य यह है कि लेखक द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते हैं, जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की समुचित जानकारी है स्पष्ट है कि लेखन लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। केवल वर्णियों की रचना अथवा शब्दों के अनुलेखन को लेखन नहीं कहा जा सकता। लेखन-व्यवस्था के विभिन्न घटकों से परिचित होना तथा लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करना लेखन के आवश्यक अंग है। यही कारण है कि चित्रकार, पेन्टर तथा अंकित करने वालों लेखन का ज्ञाता नहीं माना जा सकता। लेखन-कुशलता के लिए भाषा विशेष तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की पर्याप्त जानकारी आवश्यक है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जानेंगे –

- लेखन कौशल का अर्थ जान सकेंगे।

- शब्दकोष को समझ सकेंगे।
- मौन वाचन का महत्व समझेंगे।
- वाक्य संरचना को जान सकेंगे।

लेखन कौशल

Writing skills

भाषाई कौशलों में लेखन-कौशलों जटिलतम कौशल माना गया है। प्रथम तीन कौशलों में पर्याप्त कुशलता अर्जित कर लेने से ही अध्येय भाषा पर पूरा अधिकार नहीं मना जा सकता, लेखन पर अधिकार कराना भी अन्य भाषा –शिक्षा का महत्वपूर्ण दायित्व है। वस्तुतः चारों कौशलों के प्रयोग की कुशलता प्राप्त कर लेने के पश्चात् ही यह कहा जा सकता है कि अध्येय भाग पर समुचित अधिकार हो जाता है। अतः भाषाई कौशलों के शिक्षण के क्रम में लेखन – कौशल का विकास एवं शिक्षण अनिवार्य हो जाता है। इसके बिना भाषा का औपराचिक के शिक्षण अधूरा ही माना जाता है। मातृभाषा में भी वचन तथा लेखन की कुशलता औपराचिक शिक्षा का अनिवार्य अंग है। अन्य भाषा में भी तीनों कौशलों के विकास के साथ ही लेखन का शिक्षण, उसका विधिवत अभ्यास कराना अनिवार्य हो जाता है।

लेखन-कौशल का अर्थ और महत्व

लेखन-कौशल का अर्थ है भाषा –विशेष में स्वीकृत लिपि –प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कुशलता। सामान्यतः प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि –व्यवस्था होती है। इन लिपि-प्रतीकों को वही ही समझ सकते हैं। जिन्हें उस भाषा की लिपि –व्यवस्था का ज्ञान है। इसका तात्पर्य यह है कि लेखक द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते हैं, जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की समुचित जानकारी है स्पष्ट है कि लेखन लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। केवल वर्णियों की रचना अथवा शब्दों के अनुलेखन को लेखन नहीं कहा जा सकता। लेखन-व्यवस्था के विभिन्न घटकों से परिचित होना तथा लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करना लेखन के आवश्यक अंग है। यही कारण है कि चित्रकार, पेन्टर तथा अंकित करने वालों लेखन का ज्ञाता नहीं माना जा सकता। लेखन-कुशलता के लिए भाषा विशेष तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की पर्याप्त जानकारी आवश्यक है।

रॉबर्ट लैडो- अनुसार अन्य भाषा में लेखन-कौशल सीखने से तात्पर्य लेखन-व्यवस्था के परम्परागत प्रतीकों को लिपि-बद्ध करना है जिन्हें लिखते समय लेखक ने मौन अथवा उच्चरित रूप से प्रयुक्त

किया हो अथवा दोहराया हों । स्पष्ट है कि अन्य भाषा में लेखन—कौशल सिखाने का अर्थ छात्र को उस भाषा की लेखन—व्यवस्था से परिचित कराना है। इसमें भाषा की लिपि—व्यवस्था तथा उसकी विशिष्टाओं की जानकारी के साथ —साथ उस भाषा का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक है तभी लिपि—प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति संभव है। प्रत्येक भाषा की अपनी परम्परागत लेखन—व्यवस्था होती है इसमें वैयक्तिक अभिव्यक्ति के अनुसार परिवर्तन नहीं किया जा सकता हैं। अतः भाषा की अन्य विशिष्टाओं के साथ लिपि—प्रतीकों के रचना की योग्यता लेखन—कौशल की प्रमुख विशेषता है। लेखन को भाषा का गौण कौशल एवं विचारों की आंशिक अभिव्यक्ति माना जाता है भाषा का उच्चचरित रूप ही वस्तुतः पूर्ण माना जाता है । प्रत्येक भाषा की लेखन —व्यवस्था भिन्न होती है यही कारण है कि दो भाषाओं में समान लिपि —प्रतीकों का प्रयोग होने पर भी उनका मूल्य दोनों भाषाओं में भिन्न होता है। मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन सीखने के लिए भाषा से प्रयुक्त लिपि—प्रतीकों के आन्तरिक मूल्यों से परिचित होना आवश्यक है। इन मूल्यों से परिचित होने के साथ —साथ लेखन की कुशलता प्राप्त करना भी आवश्यक है। लेखन की कुशलता अभ्यास—जनित है। अभ्यास को आदत के रूप में परिणत करने पर ही लिपि—व्यवस्था पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। लेखन—व्यवस्था का सतत अभ्यास करने तथा सजग रूप में उसका प्रयोग करने पर वह व्यवहार का सहज अंग बन जाती है, आदत के रूप में परिणत हो जाती है । इसके आधार पर ही लेखन —कौशल का विकास सम्भव है। अतः छात्र में इस प्रकार की अभ्यास—जनित कुशलता उत्पन्न करना मातृभाषा तथा अन्य भाषा—शिक्षण का विशिष्ट उद्देश्य है। भाषा—शिक्षण के लिपि—बुद्ध प्रतीकों का मानव—सभ्यता के विकास में विशेष योगदान रहा है। इसके माध्यम से मानव—जाति की मान्यताएँ लिखित सामग्री के रूप में सुरक्षित रहती हैं और क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संक्रमित होती हैं। मानव अपने पूर्वजों के जीवन उनके अदर्शों तथा जीवन—मूल्यों से लिपिबद्ध सामग्री के माध्यम से ही भली—भाँति परिचित होता है। उसके विकास की दिशाएँ इसके द्वारा ही प्रशस्त होती हैं।

(2) अन्य भाषा में लेखन—कौशल के विकास द्वारा अन्य भाषा— भाषी जन समुदाय के साथ विचारों आदान—प्रदान संभव होता है। इसके माध्यम से वह व्यापक क्षेत्र में अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषित करने में समर्थ होता है। लेखन के अभाव में विचारों की अभिव्यक्ति संभव नहीं है।

(3) लेखन—कौशल के माध्यम से छात्र का ज्ञान—क्षेत्र विस्तृत होता है। वह विविध प्रकार की सामग्री एवं विविध विषयों के संबंध में न केवल लेखन के आधार पर जानकारी प्राप्त करता है बल्कि अपने भावों विचारों को भी लिपिबद्ध करने की योग्यता अर्जित करता है। ज्ञानात्मक तथा भावात्मक सामग्री का गहन अध्ययन तथा तत्त्वसंबंधी विचारों की स्थायी अभिव्यक्ति की कुशलता लेखन के माध्यम से ही संभव है।

(4) मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन—कौशल का विकास भाव—प्रकाशन के स्थायी एवं व्यापक रूप से अधिकार प्राप्त करने का साधन है। लेखन भाव—प्रकाशन का व्यापक एवं शक्तिशाली माध्यम तथा

भाषा सीखने का चरम सोपान है। इस कुशलता के विकास द्वारा अन्य भाषा के छात्र को अपने भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का एक संबल साधन उपलब्ध होता है। वह जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा मनोरंजन के उद्देश्य से लेखन-कौशल का उपयोग होता है बल्कि रचानात्मक कुशलता का भाव भी जागृत होता है। भाषाई उपलब्धि की यह चेतना आगे चलकर ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न दिशाओं में प्रेरणा का स्रोत बनती है।

(5) लेखन-कौशल साहित्यिक सृजन का मूल आधार है। लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की शाश्वत अभिव्यक्ति साहित्य का रूप ग्रहण करती है। यद्यपि भाषा के मौखिक रूप द्वारा भी साहित्य सृजन होता है परन्तु वह अत्यन्त सीमित और देश-काल से नियंत्रित होता है। व्यापक धरातल पर साहित्य की अभिव्यक्ति को स्थायित्व प्रदान करने का गौरव लेखन-कौशल को ही प्राप्त है।

(6) लेखन-कौशल का महत्व इस दृष्टि से भी स्वतः स्पष्ट है कि प्रत्येक लेखन-व्यवस्था के साथ उसकी संस्कृति की सम्बद्ध रहती है। लेखन के माध्यम से सम्बद्ध संस्कृति से भी परिचित होता है। इस प्रकार अन्य भाषा का अध्ययन लेखन-कौशल के माध्यम से ही भाषा में निहित संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है। लेखन-कौशल की महत्ता इस दृष्टि से स्वतः स्पष्ट है। अतः किसी समाज की आवश्यक है। लेखन के माध्यम से लेखक पाठकों तक अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषित कर सकता है। इतनी ही नहीं अपने उच्चतम रूप में यह सर्जनात्मक लेखन का भी एकमात्र माध्यम है। लेखन के माध्यम से ही वह अपने विचारों तथा भावों को साहित्यिक रचना के रूप में प्रस्तुत कर सकता है और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित कर सकता है। वस्तुतः लेखन-कौशल का शिक्षण भाषाई कौशलों में विशेष महत्ता रखता है। इसका कारण यह है कि वार्तालाप तथा वाचन की तुलना में लेखन एक जटिल कौशल है। इसमें शैलीगत तत्व वार्तालाप की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। वार्तालाप में विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति वक्ता की भाव-भंगिमा अनुतान-सौचं तथा विवृति द्वारा अधिक स्पष्ट होती है। परन्तु लेखन में भाषा के चयनित प्रयोग के साथ ही साथ शैलीगत विशेषताएँ भी अपेक्षित हैं भाषा की संरचना और शब्द-भण्डार पर पर्याप्त अधिकार भी आवश्यक होता है। अतः लेखन-कौशलों को विविध कुशलताओं का समन्वित रूप माना जा सकता है।

अन्य भाषा में लेखन के माध्यम से विचारों की प्रभावी अभिव्यक्ति एक विशिष्ट कुशलता है। भाषा-शिक्षण में इस लक्ष्य की ओर छात्रों को निर्देशित करना शिक्षक का प्रमुख दायित्व है। वाचन की भाँति लेखन-शिक्षण में भी अध्यापक को विभिन्न स्तरों तथा विविध भाषाई पक्षों पर ध्यान देना पड़ता है। एक ओर उसे वर्णों की बनावट पर ध्यान देना पड़ता है। तो दूसरी ओर उनके संयोगों अथवा शब्दों की वर्तनी पर इसी के साथ सही वाक्य-संरचना तथा वाक्य में शब्दों के उपयुक्त चयन एवं विचारों की अभिव्यक्ति पर भी दृष्टि केन्द्रित करनी पड़ती है। अतः शिक्षण की दृष्टि से लेखन-कौशल के विकास के मुख्य तीन स्तर माने जाते हैं। वर्ण वर्तनी और रचना इनका समुचित विकास ही लेखन-कौशल में

वास्तविक कुशलता का द्योतक है जो लेख में पाते हैं। विद्यार्थियों का बुरे लेखन का एक कारण और भी है। अंग्रेजी और फारसी के समान ही हम नगरी लिपि में भी शिकस्त (घसीट) लिखावट लाना चाहते हैं। यदि हम चाहते हैं कि विद्यार्थियों का लेख सुन्दर बनें तो हमें इस दूषित प्रवृत्ति को दूर करना होगा।

हमारे सामाजिक जीवन में रचनाकार अथवा लेखक का बड़ा महत्व है। समाज में दो व्यक्ति ही आदर प्राप्त करते हैं— एक वक्ता और दूसरा लेखक। परन्तु वक्ता का आदर तो केवल उसके जीवनकाल में होता है। उसकी मृत्यु के पश्चात जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, वैसे-वैसे लोग उसे भूलते जाते हैं, परन्तु रचनाकार अथवा लेखक अपनी रचनाओं द्वारा सदा जीवित रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रायः देखा जाता है कि परीक्षा में प्रश्न-पत्रों के उत्तर लेख के रूप में ही देने होते हैं और लेख के आधार पर ही विद्यार्थी अंक प्राप्त करता है। इस दृष्टि से रचना या लेखन को वर्तमान शिक्षा की पराकाष्ठा कहा जा सकता है। रचना वह सार्थक तथा कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा हम निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर अपने विचारों को लिपिबद्ध करते हैं।

लिखित रचना के उद्देश्य

- (1) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे अपने विचारों को स्पष्टता पूर्वक क्रमबद्ध रूप से तथा शुद्ध भाषा में लिख सकें।
- (2) अध्यापक विद्यार्थियों की इस बात में सहायता करें कि वे धीरे-धीरे अपने शब्द-भण्डार को बढ़ा सकें और अपने उस शब्द भण्डार का सफलता से प्रयोग भी कर सकें।
- (3) अध्यापक को सावधानीपूर्वक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का निरीक्षण करना चाहिए और जिस किसी विद्यार्थी में वह भाषा संबंधी प्रतिभा दिखे उसे उत्साहित करें।
- (4) अध्यापक इस बात का विशेष ध्यान रखें कि जिस विषय पर बालकों से कुछ लिखवाया जाए वह ऐसा हो कि उनकी विचार शक्ति और निरीक्षण शक्ति का विकास हो सके।
- (5) रचना ठीक ढंग से लिखी जाए यह इस बात पर निर्भर करता है कि कक्षा का वातावरण स्वतः तथा मित्रतापूर्ण हो। बालक के मान में भय क्रोध अथवा किसी और प्रकार का आयोग नहीं होना चाहिए।
- (6) रचना शिक्षण के द्वारा हम बालकों को इस योग्य बनाते हैं कि वे बड़ी से बड़ी बात को संक्षिप्त रूप में लिख सकें।
- (7) रचना के द्वारा हम बालकों में वह क्षमता उत्पन्न करते हैं जिसके द्वारा वे दूसरे व्यक्तियों की लिपिबद्ध अभिव्यक्तियों का समझ सकें।

विशेषताएँ — भाषा शास्त्रियों के अनुसार लिखित रचना करते समय छात्रों को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए।

(1) जिस प्रकार भाषा भावों का अनुसरण करती है, उसी प्रकार अर्थ और भाव भी भाषा का अनुसरण करते हैं। इसीलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि वे प्रत्येक शब्द का उसकी आवश्यकता के अनुसार ही तथा उचित स्थान पर प्रयोग करें, नहीं तो भावों का व्यतिरेक उत्पन्न हो सकता है। साधारण रूप से यह समझ सकता है कि हम जो कुछ भी बोलते अथवा लिखते हैं वह हमारे भावों के अनुकूल होता है परन्तु कभी-कभी ऐसा होता है कि भ्रम अज्ञानता या शीघ्रता के कारण कहते या लिखते तो वहीं हैं जो हमारे भाव हैं परन्तु श्रोता या पाठक के लिए उसका भाव दूसरा हो सकता है। जैसे— मनुष्य के समान चूहे भी अपनी रक्षा के लिए बिल बनाते हैं। इस वाक्य द्वारा यह भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अपनी रक्षा के लिए बिल बनाता है। इस वाक्य को हम ऐसे भी कह सकते हैं कि जैसे मनुष्य अपनी रक्षा के लिए घर बनाते हैं वैसे ही चूहे अपनी रक्षा के लिए बिल बनाते हैं।

(2) रचना में ऐसे वाक्यों का प्रयोग न किया जाना चाहिए जो भावों को अस्पष्ट बना दें। अपने लेख में अनावश्यक या निरर्थक शब्दों का प्रयोग न करें। कई छात्र ऐसा लिखते हैं—कि मेरे पिता ने बड़ी वाली कलम स्वयं ले ली और छोटी वाली मुझे दे दी। इसमें वाली शब्द की कोई आवश्यकता नहीं है।

लिखित रचना या मौलिक रचना संबंधी आवश्यक बातें

(1) रचना (कहानी लेख) की भाषा सरल, सुबोध एवं विषय के अनुकूल होनी चाहिए।

(2) रचना में व्याकरण के नियमों का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

(3) लिखित चयन का आकार न बहुत लम्बा होना चाहिए और न बहुत छोटा है। किसी भी लेख में लम्बी चौड़ी भूमिका देना अनुचित है। परन्तु इस बात की सावधानी रखी जाती है कि लेख में कोई छूटने न पाए।

(4) लेख लिखते समय हम कही विषय से बाहर न चले जाएँ और न अप्रासंगिक बातों को ही इसमें स्थान दिया जाए।

(5) किसी भी लेख में एक स्थान पर किसी बात का समर्थन करना और दूसरे स्थान पर उसका विरोध करना उचित नहीं है।

(6) लेख लिखते समय इस बात की सावधानी रखी जाएँ कि जितने भी भाव हों, वे उचित हों तथा क्रमानुसार ही दिए जाएँ।

(7) लिखित रचना को भिन्न-भिन्न अनुच्छेदों में विभाजित कर लेना चाहिए । एक अनुच्छेद में एक ही भाव होना चाहिए। अनुच्छेद प्रारंभ ऐसे वाक्यों से किया जाए जिनमें अनुच्छेद का सार आ जाए।

सृजानात्मक रचना अनेक प्रकार की हो सकती है— यथा

(1) निबन्ध लिखना,

(2) कहानी लेखन,

(3) लेख लिखना।

स्वतंत्रता रचना

क्रमबद्ध रूप से विचारों की नियंत्रित लिखित अभिव्यक्ति सिखाने के बाद स्वतंत्र रूप से विचारों को व्यक्त करने का अवसर देना आवश्यक है। अतः लेखन —कौशल के विकास में स्वतंत्र रचना को कुशलता को विकसित करना मुख्य उद्देश्य है। छात्रों संबंधी इतनी कुशलता उत्पन्न करना आवश्यक है कि वे स्वतंत्र रूप से भावों की लिखित अभिव्यक्ति कर सकें और अपने विचारों को धारा—प्रवाह रूप से अभिव्यक्त कर सकें। स्वतंत्र रचना में छात्र न केवल विचारों की दृष्टि से स्वतंत्र होता है बल्कि वह भाषाई अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी स्वतंत्र होता है। अतः रचना में शब्द —चयन संरचना और शैलीगत विविधता स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है।

स्वतंत्र रचना सिखाने के लिए निबंध कहानी तथा पत्र—लेखन का शिक्षण आवश्यक समझा जाता है। छात्र अनुभव —क्षेत्र से सम्बद्ध निबंध, परिचित कहानी तथा विविध प्रकार के पत्र—लेखन के आधार पर विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति करना सीखते हैं। अतः स्वतंत्र रचना सिखाते समय प्रारंभ में अतिपरिचित विषयों का ही चयन करना उचित है। इससे छात्र विषय—प्रतिपादन तथा भाषा के प्रयोग पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हैं। उन्हें विचारों की सही अभिव्यक्ति करना सिखाना आवश्यक है। जिससे उनके द्वारा अभिव्यक्त विचार रचना के रूप में गृहीत हो सकें और उनके द्वारा निर्दिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

निबंध —लेखन

छात्रों को स्वतंत्र रूप से निबंध लिखना सीखाना विशिष्ट कुशलता है। इसके लिए रचना—शिक्षण से संबंधित विविध अभ्यास दिए जाने चाहिए। छात्रों को प्रारंभ में सरल रचना सिखाई जाए फिर क्रमशः जटिल विषयों पर रचना करवाई जा सकती है। रचना— के प्रारंभ में निबंध का मौखिक प्रतिपादन कराना उचित है। अध्यापक क्रमबद्ध रूप से निबंध का विकास करता है और इस क्रम में छोटे—छोटे प्रश्न पूछ कर वह छात्रों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करता है। रचना का मौखिक रूप से विकास करत समय उसकी रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है और छात्रों से उसके आधार पर निबंध लिखवाया जाता

है। छोटी कक्षाओं में छात्रों से चित्र के आधार पर भी रचना करवाई जा सकती है। रचना-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि छात्र विचारों की क्रमबद्ध अभिव्यक्ति में भाषा का स्वतंत्र प्रयोग कर सकें। उच्चस्तर पर रचना सिखाते समय शैलीगत विशेषताओं पर छात्रों का ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक नहीं है। भाषा के सहज प्रवाहपूर्ण प्रयोग का अभ्यास कराना उचित है। अनुच्छेद-लेखन से तात्पर्य को विचार-विशेष से सम्बद्ध वाक्यों को क्रमबद्ध रूप से लिखना सिखाया है। वाक्य-रचना का अभ्यास करवाने के पश्चात इस अभ्यास को सहज रूप से विकसित किया जा सकता है। छात्र परस्पर सम्बद्ध वाक्यों को क्रमबद्ध रूप से लिखते हैं। क्रमशः सम्बद्ध वाक्यों की संख्या में वृद्धि की जाती है और छात्र किसी विषय से संबंधित विचारों को अनुच्छेद के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार अनुच्छेद रचना विषय से सम्बद्ध विचारों की क्रमबद्ध अभिव्यक्ति है। वाक्यों की संरचना सिखाने के बाद ही उनके क्रमबद्ध लेखन का अभ्यास कराया जाता है। अनुच्छेद-रचना को क्रमिक रूप में ही सिखाना उचित है। प्रारंभ में छात्र से दैनिक क्रियाओं का अपने परिवार का तथा प्रतिदिन की सुपरिचित घटनाओं का ही वर्णन करवाया जाता है जिससे उसका ध्यान भाषा और विचारों की अभिव्यक्ति पर केन्द्रित हो सके। सीखे गए वाक्यों के माध्यम से विचारों की क्रमबद्ध अभिव्यक्ति तथा वाक्यों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना सिखाना आवश्यक है, अनुच्छेद-रचना में निम्नलिखित अभ्यासों की सहायता ली जा सकती है।

भाषा की संरचना

(structure of language)

भाषा समप्रेषण का एक माध्यम होता है जिसके द्वारा भाव व विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है। भाषा के स्वरूप में दो तत्व होते हैं

(प) उच्चारण (phonemes)

(पप) वाक्य संरचना (morphemes)

भाषा की मूल इकाईयों की बुनियादी ध्वनि को उच्चारण कहते हैं। भाषा की सहायता से वाक्य का स्वरूप दो तत्व निहित होते हैं। भाषा में वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। शब्दों की सहायता से वाक्य का स्वरूप विकसित किया जाता है जिसे वाक्य संरचना (Morpheme) कहते हैं। विभिन्न प्रकार से शब्दों को मिलाने ढंग से भाषा के व्याकरण की उत्पत्ति होती है परन्तु आधुनिक विशेषज्ञ व्याकरण तथा वाक्य संरचना को अलग-अलग प्रयत्न मानते हैं और इन्होंने नया रूपान्तर व्याकरण (transformatinal grammar) दिया है। प्रत्येक भाषा के वाक्यों की संरचना का गठन अलग-अलग होता है। वाक्य में शब्दों का क्रम सभी भाषाओं में समान नहीं होता है।

सी० एस० भण्डारी के अनुसार संरचना की परिभाषा-वाक्यों में शब्दों की व्यवस्था के प्रारूप को संरचना कहते हैं।

प्रत्येक भाषा में वाक्यों की संरचना अपने ढंग की होती है। हिन्दी वह अंग्रेजी भाषा के वाक्यों की संरचना भिन्न प्रकार है। जैसे-

1. हिन्दी वाक्य संरचना—कर्ता कर्म तथा क्रिया का क्रम होता है।
2. अंग्रेजी वाक्य संरचना —कर्ता क्रिया तथा कर्म का क्रम होता है। वाक्य के गठन में शब्दों का क्रम बदलने से अर्थ बदल जाता है। जैसे—
 1. राघव यहाँ है।
 2. यहाँ राघव है।
 3. राघव है यहाँ।

इस उदाहरण में तीन शब्दों के क्रम बदल कर तीन वाक्यों का गठन किया गया है। शब्द तीनों में एक ही है परन्तु उनके क्रम व्यवस्था से अर्थ बदल गया है। इसलिए शब्दवाली से वाक्य संरचना अधिक महत्वपूर्ण होती है। शब्दों की व्यवस्था या क्रम को संरचना गठन कहते हैं। इसलिए संरचना के अन्तर्गत सार्थक शब्दों को एक क्रम में उपयुक्त करते हैं जिसमें उसका अपना अर्थ होता है तथा सम्प्रेषण भी पूर्ण होता है।

इस प्रकार संरचनाएँ का सशक्त यन्त्र होता है यह वाक्यों से भिन्न होती है वाक्यों का स्वरूप व्याकरण के नियमों पर आधारित होती है, जबकि संरचनाओं में व्याकरण की आवश्यकता नहीं होती है। वाक्यों में शब्दों का क्रम अर्थ का निर्धारित करता है।

संरचना के प्रकार

(types of structure)

संरचनाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. वाक्य प्रारूप
2. संक्षिप्त वाचन प्रारूप
3. कहावत प्रारूप तथा
4. सूत्र प्रारूप। इनका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया गया है—

1- वाक्य प्रारूप (sentence pattern)

वाक्य प्रारूप से तात्पर्य शब्दों क्रम जो एक प्रतिरूप होता है जिसके अनेक अर्थ होते हैं। इसलिए वाक्यों का प्रारूप भी वाक्य का प्रतिमान होता है, जिसका आधार समान होता है परन्तु विभिन्न शब्दों से बना होता है जैसे—

घड़ी में 6 बजे है। घड़ी 12 बजे है। इस प्रकार के अनेक वाक्य बनाये जा सकते हैं। प्रत्येक शब्द का स्थान निश्चित है। शब्दों का स्थान बदलने पर अर्थ बदल जाता है शब्द वही रहते हैं। जैसे—

1. गोपाल ने पुस्तक राम को दी।
2. राम ने पुस्तक गोपाल को दी।

इन वाक्यों में एकसे शब्द हैं परन्तु क्रम बदलने से अर्थ बदल गया। यह अर्थ बदलने का कारण व्याकरण की दृष्टि से कर्ता और क्रम में परिवर्तन हुआ है। वाक्य से शब्दों की भूमिका बदल गई है।

2. संक्षिप्त वाचन प्रारूप ;चीतेंम चंजजमतदद्ध

वाक्य में शब्दों को एक साथ के रूप में प्रयुक्त करते हैं जो किसी विचार को प्रगट करता है परन्तु वाक्य नहीं होता जैसे—आग बबूला काला —अक्षर तथा चन्द्र मुख।

3. कहावत का प्रारूप

कहावत में वाक्य पूर्ण नहीं होते हैं परन्तु उनके प्रयोग से सम्प्रेषण पूर्ण होता है: जैसे – समझदार को इशारा काफी नाच न आवे आँगन ढेढ़ा इनमें व्याकरण के नियमों का अनुपालन नहीं होता ।

4. शब्दों का सूत्र रूप में

कुछ शब्द विशिष्ट अवसरों पर प्रयुक्त करते हैं। उनका अपना प्रारूप होता है: जैसे— क्षमा कीजिए प्रसन्न रही प्रमाण, कैसे है? 3

संरचनाओं की विशेषताएँ

(characteristic of structure)

उपरोक्त परिभाषाओं एवं विवेचन में संरचनाओं की विशेषताओं का अनुशरण किया गया है। विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. वाक्य में शब्दों की सार्थक क्रम में व्यवस्था को संरचना कहते हैं।
2. संरचना सम्प्रेषण की दृष्टि से पूर्ण होती है।
3. संरचना में शब्दों के क्रम की व्यवस्था अर्थ की दृष्टि से करते हैं।
4. वाक्य में शब्दों का स्थान बदलने से अर्थ बदल जाता है।
5. नई शब्दवाली सीखने की अपेक्षा संरचना अधिक महत्वपूर्ण होती है।
6. प्रत्येक भाषा की संरचना अपनी होती है। अथवा अन्य भाषाओं से भिन्न प्रकार की होती है। भाषा में शब्दवाली और संरचनाएँ होती हैं।
7. संरचनाएँ में व्याकरण के नियमों का अनुशरण नहीं किया जाता है। संरचना व्याकरण में मुक्त है। संरचना भाषा की पाठ—सामग्री का पक्ष माना जाता है।
8. रूपान्तरण व्याकरण संरचना की देन है।
9. वाक्यों में शब्दों के क्रम व्यवस्था को संरचना कहते हैं। शब्दों के क्रम को वाक्य में बदलने से अर्थ बदल जाता है।
10. संरचना बड़े प्रारूप का खण्ड होता है।
11. संरचनाएँ भाषा का सशक्त यंत्र होती हैं।
12. वाक्यों का स्वरूप व्याकरण पर आधारित होती हैं। संरचनाओं का रूप अर्थ पर निर्भर होता है। संरचना में शब्दों का क्रम महत्वपूर्ण होता है। संरचना में शब्दों को अधिक महत्व देते हैं।
13. संरचना व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भी होती है परन्तु सम्प्रेषण पूर्ण होता है।
14. वाक्य संरचना के चार रूप—वाक्य प्रारूप संक्षिप्त वाचन, कहावतें तथा शब्द—सूत्र में होते हैं अन्तिम तीन रूप व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध नहीं होते पर सम्प्रेषण पूर्ण होता है। मूल व्याकरण प्रयुक्त करते हैं।
15. संरचनाएँ व्याकरण से मुक्त होती हैं।

संरचनाओं के चयन हेतु अधिनियम

(principle of selections of structure)

अद्योलिखित नियमों के आधार पर संरचनाओं का चयन किया जाता है — 1. उपयोगिता 2. सरलता, 3. शिक्षण योग्यता तथा 4. उत्पादकता इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1. उपयोगिता

संरचनाओं का प्रारूप शिक्षण की दृष्टि से उपयोगी हैं। वे संरचनाएँ जिनका उपयोग बोलने पढ़ने तथा लिखने में अधिक उपयोगी हो। उपयोग में न आने वाली संरचनाओं का चयन नहीं करना चाहिए।

2. सरलता

सरलता, संरचना के अर्थ पर निर्भर होती है। संरचना की सरलता का आधार अर्थ एवं प्रारूप दोनों ही होते हैं। कुछ संरचनाएँ अर्थ एवं प्रारूप की दृष्टि से कठिन होता है। इनका उपयोग कम करना चाहिए जैसे—आदि तु तेज भागते हों, विद्यालय समय पर पहुँच जाते। संरचनाओं का चयन अर्थ एवं रूप के आधार पर करना चाहिए।

3. शिक्षण योग्यता

ऐसी संरचनाओं का चयन करना चाहिए जिन्हें कक्षा में सुगमता से पढ़ाया जा सके या प्रदर्शित किया जा सके। सरल संरचनाओं को आरंभ में पढ़ाना चाहिए और कठिन संरचनाओं को अन्त में प्रदर्शित किया जाए, जैसे—मोहन पढ़ रहा है। संरचना पढ़ाने में सरल है। मोहन प्रातःकाल से पढ़ रहा है। अपेक्षाकृत शिक्षण की दृष्टि से कठिन संरचना है।

4. उत्पादकता

ऐसी संरचनाओं का चयन करना चाहिए जो आगे आने वाली संरचनाओं को समझने तथा सीखने में सहायक हों। वाक्य के प्रारूप की संरचना एक आदर्श के रूप में होनी चाहिए जिससे अनेक वाक्य की रचना की जा सकें जैसे—

राघव पढ़ता है राघव है राघव गाता है।

राघव हँसता है राघव लिखता है राघव खेलता है।

संरचनाओं का स्तरीकरण

संरचनाओं के स्तरीकरण का तात्पर्य होता है, संरचनाओं को एक समुचित क्रम में (चढ़ाव के क्रम) रखना। संरचनाओं के स्तरीकरण का उद्देश्य होता है सरल से कठिन कम उपयोगी से अधिक उपयोगी में व्यवस्थित करना।

एक शिक्षक द्वारा संरचनाओं को समुचित क्रम में स्तरीकरण करना चाहिए तभी संरचनाओं का शिक्षण प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है।

एफ0जी0 फ्रेंच ने संरचनाओं के स्तरीकरण हेतु एक अनुमापनी को दिया, जिससे भाषा शिक्षण प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है।

1. सरल दो खण्ड प्रारूप —वह सोया, उसने गया वह हँसा, वह चला गया।
2. सरल तीन खण्ड प्रारूप — वह सो रहा है, वह गा रहा है, यह पुस्तक है।
3. सरल चार खण्ड प्रारूप —प्रमोद ने मुझे एक पुस्तक दी शिक्षक ने उसे बाहर जाने को कहा।
4. प्रश्न प्रारूप —तुम कहाँ जा रहे हो? तुम विद्यालय क्यों नहीं गये।
5. आदेश/ आग्रह प्रारूप—तुम सभी बैठ जाओ, आप पधारिये।

संरचनाओं के स्तरीकरण के लिए तीन प्रविधियों का उपयोग करते हैं—

6. उपापदेयता 2. शिक्षण योग्य तथा 3. कठिनाई स्तर
1. **उपादेयता** —संरचनाओं का स्तरीकरण उनकी उपदेयता की दृष्टि से करना चाहिए, जिनका उपयोग भिन्न अवस्थाओं में किया जाता है।
2. **शिक्षण योग्य** — संरचनाओं को स्तरीकरण चढ़ाव क्रम में करना चाहिए। जिससे पढ़ाई गयी संरचनाओं का उपयोग शिक्षक कठिन संरचनाओं को पढ़ाने में कर सकें। अन्य संरचनाओं के शिक्षण में प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं होती।
3. **कठिनाई स्तर**— संरचनाओं का स्तरीकरण उनकी कठिनाईयों के अनुसार करना चाहिए। सरल संरचनाओं को पहले पढ़ाना चाहिए और सबसे कठिन संरचनाओं को अन्त में पढ़ाया जाये। अधिक जटिल संरचनाओं को भी अन्त में पढ़ाया जाये।

उपरोक्त तीनों मानदण्डों के आधार पर संरचनाओं का स्तरीकरण किया जाना चाहिये जिससे छात्रों की संरचनाओं को बोधमय करने में सुगमता होती है।

पठन या वाचन शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

भाषा सीखने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम है— श्रवण भाषण पठन एवं लेखन। वस्तुतः यह भाषा सीखने के महत्वपूर्ण चार कौशल हैं। इन कौशलों में से वर्तमान वैज्ञानिक प्रतिस्पर्धात्मक व्यवस्था के युग में पठन कौशल का विशेष महत्व है। तीन आर (श्री आर—रेडिंग, राइटिंग व रिथमोटिक) में भी पढ़ने का प्रथम स्थान है। पठन पर ही अन्य विषयों का ज्ञान निर्भर है। यथोचित पठन अभ्यास पर ही बालक की समस्त मानसिक और भावात्मक उन्नति आश्रित है।

केथरीन ओकानर के शब्दों में पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है। जिसमें दृश्य श्रव्य एवं गतिवाही सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से संबंध निहित है।

एतदर्थ निम्न बिन्दुओं को अपनाया जा सकता है।

1. **उदबोधन प्रणाली**— उदबोधन विधि प्रश्नोत्तर प्रणाली का विकसित रूप है। इस प्रणाली में छात्रों की कल्पना शक्ति व विचार शक्ति को प्रेरित किया जाता है। छात्रों को प्रेरणा प्रदान करके ज्ञात तथ्यों की जानकारी उनसे जी जाती है। इस प्रकार उनके सुषुप्त ज्ञान को जाग्रत करने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रणाली का प्रयोग तब उपयुक्त होता है। जब छात्र वर्णनात्मक निबंधों को लिखने में समर्थ हो जायें। किसी दृश्य का वर्णन, मेले का वर्णन, जीवन—चरित्र आत्म—कक्षा ऐतिहासिक तथा भौगोलिक स्थलों का वर्णन, ग्राम्य जीवन, बसन्त ऋतु आदि विषयों के संबंध में रचना की शिक्षा देने के लिए उदबोधन विधि का प्रयोग किया जा सकता है।
2. **प्रवचन प्रणाली**— अध्यापक कक्षा में किसी नवीन विषय पर अपना प्रवचन या व्याख्यान देता है। छात्र ध्यानपूर्वक उसे सुनते हैं।
1. **विद्यालय के वातावरण से परिचय करवाना**—छात्रों को विद्यालय के विविध कार्यक्रमों से परिचय करवाते हुए उनकी रुचि विकसित की जाये जिससे छात्र अपनी उम्र के छात्रों के साथ मिल जुलकर काम करना और निर्देशों का पालन करना सीख ले। धीरे—धीरे पठन से प्रयुक्त

दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करते हुए उन्हें पठन हेतु प्रेरित किया जाये जैसे-संस्कृत गीत चित्र व उनके संस्कृत शब्द चित्र व कला आदि का प्रयोग करते हुए।

2. **पठन संबंधी कुशलताओं का निर्माण**—लिखि हुई विषय-वस्तु को समझ सकना क्रमबद्ध समझ सकना प्रसंगानुसार समझ सकना निष्कर्ष पर पहुँच सकता तथा तुलानात्मक दृष्टि से समझ सकना आदि क्षेत्रों में छात्रों में कुशलता उत्पन्न की जाए। एकदर्थ भाषाज्ञान और प्रत्यय निर्माण श्रव्य बोध दृष्टि बोध गति नियंत्रण व पठन के प्रति रुचि होना अत्यन्त आवश्यक है।
3. **बालकों की वैयक्तिक योग्यताओं का निदान**—छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान पठन करवाते समय रखा जाए। जो छात्र शारीरिक व मानसिक दृष्टि से दुर्बल हो उन्हें कुछ अतिरिक्त समय देकर पठन आरंभ कराना चाहिए।

उपयुक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए पठन शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित कर सकता है—

पठन शिक्षण के उद्देश्य

पठन प्रक्रिया में मुख्यतः तीन सोपान सम्मिलित होते हैं—

1. वर्णमाला को पहचानना।
2. अर्थग्रहण करना।
3. पाठ्य-वस्तु में क्रमबद्धता लाना।

इस प्रक्रिया के अनुसार पठन शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. ध्वनि के प्रतीक वर्णों को देखकर पहचानने की योग्यता उत्पन्न करना।
2. ध्वनियों का उचित ज्ञान करवाना ताकि छात्र उचित उच्चारण स्थान से ध्वनि निकाल सकें।
(अ) ध्वनियों का उचित ज्ञान करवाना ताकि छात्र उचित उच्चारण स्थान से ध्वनि निकाल सकें।
(ब) प्रत्येक शब्द पर समुचित बल प्रदान करें।
(स) विराम चिन्हों का ध्यान रखते हुए पठन करें।
3. सन्धि समास प्रत्यय व उपसर्ग सहित शब्दों का विश्लेषण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
4. छात्रों ने पढ़कर कितना अर्थ ग्रहण किया है उसकी परीक्षा करना।
5. आरोह अवरोह लय प्रति गति आदि का ध्यान रखते हुए भावानुकूल वाचन करवाना।
6. लेखक के विचारों को समझकर पूर्व अर्जित ज्ञान से पठित में रुचि उत्पन्न करना जैसे—अनंताकक्षरी
7. विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन कर पठन में रुचि उत्पन्न करना जैसे अन्त्याक्षरी वाद-विवाद निबंध लेखने कथा लेखन तत्प्रातीय भाषण, चर्चा परिचर्चा वार्तालाप आदि
8. वाचन मुद्रा को भावानुसार बनाने की क्षमता उत्पन्न करना।

9. पुस्तक समुचित रीति से हाथ में पकड़ी जाए—इसका ज्ञान प्रदान करना—आँखों से 12 इंच की दूरी पर 45 अंश का कोण बनाने हुए बायें हाथ में पुस्तक ग्रहण की जाए।

पठन की आवश्यकता

मौखिक अभिव्यक्ति या वार्तालाप करने के लिए व्यक्ति या व्यक्तियों का शारीरिक रूप में आमने-सामने उपस्थित होना आवश्यक होता है। परन्तु यह हमेशा संभव नहीं होता। हम कभी ऐसे व्यक्तियों के विचारों का भी जानना चाहते हैं जो मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं। कभी हमें इस बात की भी आवश्यकता पड़ती है कि उन व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए जो इस संसार में हैं लेकिन उनसे मिलना संभव नहीं हो पाता। इस प्रकार की परिस्थिति में यदि उस व्यक्ति के विचार हमें लिखित रूप में प्राप्त हो जाता है। तो उन्हें पढ़कर हम उस व्यक्ति के विचारों से अवगत हो सकते हैं। किन्तु यह बात सभी संभव हो सकती है जब हम पढ़ना जानते हों। इस लिए ज्ञान प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार की लिखित सामग्री को पढ़ने के लिए वाचन की शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है।

पठन शिक्षण का महत्व

पठन शिक्षण के निम्नलिखित स्रोत हैं—

1. पठन शिक्षण के छात्रों का उच्चारण शुद्ध होता है।
2. स्वास्थ्य की आदत का विकास होता है।
3. ज्ञान भण्डार में बुद्धि होती है। छात्र सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है।
4. स्वतः अर्थग्रहण करने की क्षमता विकसित होती है।
5. व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास होता है।
6. सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है।
7. अभिव्यक्ति सशक्त होती है।
8. शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।
9. छात्रों में सद्वृत्तियों का विकास होता है।
10. पठन योग्यता के विकास से भाषा के अन्य कौशलों का भी विकास होता है, जैसे—लेखन, मौखिक अभिव्यक्ति, अर्थग्रहण आदि।
11. अवकाश का सदुपयोग होता है।
12. छात्र सजग रहता है।

सुन्दर पठन की विशेषताएँ

सुन्दर पठन में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है—

1. मधुरता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह—अवरोह के साथ वचन होना चाहिए।
2. प्रत्येक अक्षर को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारित करना।
3. प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।
4. पठन में सुन्दरता के साथ प्रवाह बनाये रखना।
5. आवश्यकतानुसार उचित भाव—भूगिमाओं का होना तथा समान गति से पढ़ना।

उपयुक्त ढंग का अनुसरण करने से अच्छे पठनाकर आगे चलकर उच्च वर्तार, प्रभावशाली वक्ता, सफल अभिनेता हो जाते हैं । गद्य पाठ की आधी सफलताओं तथा कविता की पूरी सफलता अच्छे वाचन पर निर्भर, होती है।

पठन के आधार

पठन के दो प्रमुख आधार होते हैं—

1. पठन मुद्रा।

1. **पठन मुद्रा**—पठन मुद्रा के अन्तर्गत पुस्तक को हाथ से पकड़ना उचित मुद्रा में बैठकर अथवा खड़े होकर पढ़ना पढ़ते समय नेत्र तथा अन्य अंगों का संचालन करना आदि आते हैं।

2. **पठन शैली**—पठन शैली के अन्तर्गत अक्षर—अभिव्यक्ति शब्दोच्चारण सस्वरता बल, विराम, लय, यति—गति तथा प्रवाह आदि आते हैं।

(प) सस्वर वाचना

सस्वर पठन का महत्व

वाचन अथवा पठन शब्द में ही सस्वर पठन का भाव निहित है। हम अपने दैनिक व्यवहार में सरस्वर पठन का प्रयोग प्रायः करते हैं। सभा—सोसायटियों में भाषण देने के लिए हम कभी—कभी अपना वक्तव्य लिखित रूप में तैयार करते हैं और फिर उसे सभा में पढ़ते । लगभग सभी दीक्षान्त भाषण लिखित सामग्री का पठन ही होते हैं। विधानसभा तथा लोकसभा में हमारे नेता भाषण देते समय प्रायः पठन ही करते हैं। इस प्रकार अनेक औपराचिक अवसरों पर भाषण देने के लिए वाद—विवाद एवं गोष्ठियों में अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए हमें सस्वर पठन की आवश्यकता पड़ती है।

शुद्ध एवं प्रभावी तथा प्रवाहपूर्ण पठन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करके वाचक के व्यक्तित्व को निखार देता है एवं वक्ता का प्रभाव श्रोताओं पर पड़े बिना नहीं रह सकता।

अच्छा सस्वर पठन वार्तालाप के समय वार्तालाप को रूचिकार बना सकता है। कभी—कभी शैक्षिक बातचीत के समय महान व्यक्तियों के उद्धरण पढ़ने की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसे समय यदि वाचक अच्छा न हुआ तो वार्तालाप का मजा किरकीरा हो जायेगा।

शैक्षिक परिसंवाद सेमिनार कार्यगोष्ठी सम्मेलन आदि में अच्छे सस्वर वाचन का अपना पृथक —महत्व है। इन स्थानों पर यदि कुछ पढ़ना पड़ा ओर सदस्य ने सुन्दर ढंग से न पढ़ा तो उसकी बात का प्रभाव कम हो जाता है।

सामाजिक उत्सवों, पास—पड़ोस के पारिवारिक उत्सवों एवं धार्मिक कृत्यों के समय रामायण, महाभारत, आल्हा आदि काव्यों का पाठ करने की शिक्षित व्यक्ति को आवश्यकता पड़ सकती है। और वाचन की कला में अकुशल व्यक्ति ऐसे अवसरों पर बगलें झोंकने लगता है।

उत्तम सस्वर वाचन में वाचक में आत्मविश्वास जागृत होता है, उसके भाषा—प्रयोग की क्षमता में वृद्धि होती है, औपराचिक अवसरों पर उसकी झिझक दूर हो जाती है और उसमें नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। अच्छी तरह पढ़ी हुई कविता को याद करने में सरलता होती है।

सस्वर वाचन के उद्देश्य

सस्वर वाचन में बड़ी कुशलता की आवश्यकता है। बालकों के उच्चारण में विराम, बालाघात संबंधी भूल नहीं होनी चाहिए। भूल करने से आदत चिरस्थायी हो जाती है और सस्वर पाठ का उद्देश्य भी नष्ट हो जाता है, परन्तु जब बालक सस्वर वाचन कर रहा हो तो पढ़ना रोककर संशोधन करने की शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। इससे पढ़ने की गति में रुकावट आ जाती है। प्रवाह के साथ पढ़ने की आदत नहीं पड़ पाती। विषय संबंध टूट जाने से शुद्ध पाठ कठिन हो जाता है। अतः अवतरण समाप्त हो जाने पर शुद्ध करना चाहिए। एक उद्देश्य पूर्ति के लिए दूसरे की बलि देना उचित नहीं। सस्वर वाचन के द्वारा छात्रों में निम्नलिखित योग्यताओं का विकास करना शिक्षक का लक्ष्य होना चाहिए—

(क) विरामआदि चिन्हों का समुचित ध्यान रखने हुए पढ़ना।

(ख) शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना यथा—श, स, छ, च्छ, ध, द्ध, स्थ, स्न की शुद्धता का ध्यान रखना। ई,ई,उ,ऊ,ए,ओ,औ, की मात्रायुक्त ध्वनियों की शुद्धता का भी ध्यान रखना।

(ग) उचित बल और आरोह—अवरोह के साथ पढ़ना।

(घ) भावनुरूप अवसर के अनुकूल पढ़ना।

(ङ) श्रोताओं की संख्या एवं अवसर के अनुसार वाणी को नियंत्रित करना।

(च) उच्चारण एवं सुर में स्थानीय बोलियों का प्रभाव न आने देना।

उत्तर सस्वर वाचन के गुण

उत्तम सस्वर वाचन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है। यदि ये उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं। तो वाचन अच्छा कहा जाएगा अन्यथा वह अच्छा नहीं कहा जा सकता। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तम सस्वर वाचन के लिए निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं —

(क) ध्वनियों का ज्ञान—बालक को विभिन्न ध्वनियों का ज्ञान होना चाहिए और समान ध्वनियों में भेद करने की समर्थता होनी चाहिए।

(ख) उच्चारण की शुद्धता—प्रसन्न विशेष, भारतीय, सौष्ठव, क्रम, कर्म, कृमि जैसे शब्दों का उच्चारण शुद्धता से किया जाए तो वाचन अच्छा कहा जायेगा।

(ग) उपयुक्त बालघात—आवश्यकता जनता, करना धरना आदि शब्दों के उच्चारण में रेखांकित ध्वनियों को आधा कर देना या लुप्त कर देना ठीक नहीं। कमल, कलम जैसे शब्दों में रेखांकित अक्षरों पर बालघात है और आगे का अक्षर के रूप में उच्चारित होता है। अच्छा वाचक उपयुक्त बालघात का ध्यान रखता है।

(घ) विराम चिन्ह—वाचन स्पष्ट विराम अर्द्ध विराम एवं पूर्ण विराम का ध्यान रखकर पढ़ना चाहिए। मारो मत जाने दो वाक्य में यदि मारो के बाद विराम न करके पढ़े तो एक अर्थ होगा और मत के बाद विराम करके पढ़े तो एक अर्थ होगा और मत के बाद विराम करके पढ़े तो दूसरा अर्थ होगा।

(ड़) **स्पष्टता**—वाचन में प्रवाह का ध्यान रखा जाय । गति पर नियंत्रण आवश्यक है। इतनी जोर से पढ़ना चाहिए कि सभी श्रोता सुन ले। शब्दों के समूहों को एक सांस में पढ़ते उनमें अर्थ की संगति का ध्यान रखा जाये। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण प्रथक रूप में ही किया जाए।

(छ) **अर्थ की प्रतीति**—सुन्दर वाचन वह है जो पढ़ते समय शब्दों का अर्थ ग्रहण करके चलता है। यदि गति, लय, उच्चारण, विराम, आदि का ध्यान रखकर वाचन किया जा रहा है तो अर्थ की प्रतीति स्वाभाविक रूपमें होती चलेगी।

(ज) **स्वर में रसात्मकता**—अच्छा वाचक मुँह से प्रत्येक ध्वनि को निकालते समय कर्कश ढंग से नहीं पढ़ता नह ही उसमें रूखापन रहता है वरन मधुरता के साथ सरल ढंग से शब्दों का उच्चारण किया जाता है। दुःखपूर्ण विषय—सामग्री को पढ़ते समय वीर —रस का ओज वाचन इवीभट ढंग से नहीं होना चाहिए।

(झ) **वाचन की मद्रा**—वाचन करते समय अच्छा वाचक आनावश्यक ढंग से सिर नहीं हिलाता हथ नहीं पटकता मेज नहीं पीटता उँगलियों को नहीं नचाता पैर से तबला नहीं बजाता पुस्तक को विकृत ढंग से नहीं पकड़ाता और न झुझकर पढ़ता है न अकड़कर ।

(ञ) **रुचि**—पढ़ते समय अच्छा वाचक पढ़ने में रुचि लेता है। उसे वाचन में आनन्द आता है उसकी रुचि को देखकर श्रोता भी आनन्द लेते है। वाचन में उसे न तो ऊब जाती है न ही इसे वह व्यर्थ का कार्य समझकर चलता है।

सस्वर वाचन के भेद—सस्वर वाचन के गुण के आधार पर इसके निम्नलिखित दो भेद किये जा सकते है—

1. छात्रों द्वारा आदर्श वाचन
2. छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन।

बालकों के समक्ष पाठय—सामग्री को जब अध्यापक स्वयं करके प्रस्तुत करता है तो उसे आदर्श वाचन कहते है। आदर्श वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य है—

(क) छात्रों को समक्ष वाचन का एक मानदण्ड उपस्थित करना।

(ख) छात्रों को यह समझाना कि उन्हें कहां तक पढ़ना है।

(ग) अपरिचित पाठय—सामग्री का छात्रों को प्रथम परिचय देना।

(घ) छात्रों के मन में व्याप्त झिझक को दूर करना।

(ङ) छात्रों को उचित गीत, विराम, उच्चारण, स्पष्टता आदि का ध्यान रखते हुए वाचन करने की प्रेरणा देना।

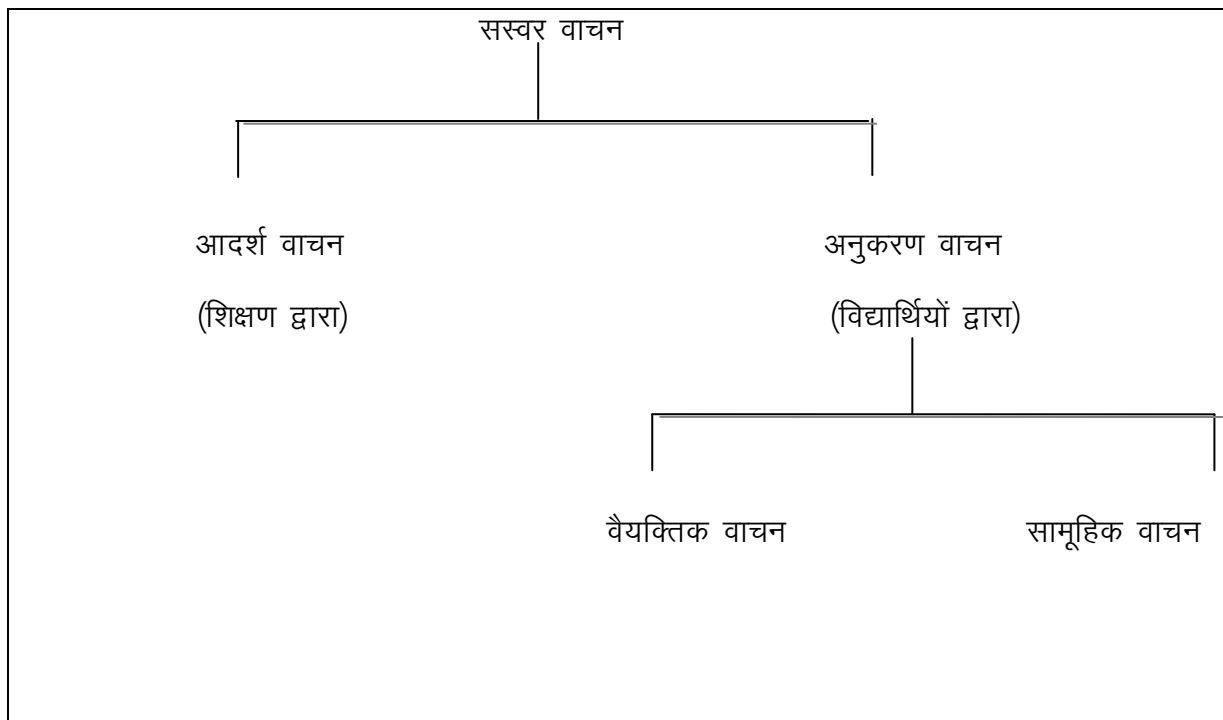
आदर्श वाचन के पश्चात छात्रों द्वारा अनुकरण किया जाता है। जब छात्र अध्यापक द्वारा किये गये वाचन के ढंग पर वाचन करने का प्रयास करते हैं तो उसे अनुकरण वाचन कहा जाता है। अनुकरण वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य है—

1. शिक्षक द्वारा किये गये आदर्श वाचन का अनुकरण करना।
2. उच्चारण को शुद्ध बनाना।
3. पाठ के भाव के अनुसार वाचन करने की क्षमता प्राप्त करना यथा—दुख में भारी स्वर से वीर—रस की सामग्री में उच्च स्वर के श्रृंगार में स्नेहयुक्त मधुर स्वर से करुण रस में दयार्द्र स्वर से तथा भक्ति रस में शान्त एवं गंभीर स्वर से वाचन करने की योग्यता प्राप्त करना।
1. वाचन में गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना
2. वाचन करते समय अर्थ ग्रहण की योग्यता का विकास करना।

वाचनकर्ता के अनुसार सस्वर वाचन को पुनः दो भेदों में बाँट सकते हैं—

1. वैयक्तिक वाचन।
2. सामूहिक वाचन

माध्यमिक कक्षाओं में वाचन प्रायः वैयक्तिक ढंग से होता है। वैयक्तिक वाचन द्वारा छात्र वाचन का अभ्यास अच्छी तरह कर सकता है और शिक्षक को भी वाचन की त्रुटियों को दूर करने में सहायता मिलती है वाचन दोषों का निदान सरलता से हो जाता है और उपरचारात्मक शिक्षण के लिए व्यक्तिगत ध्यान देने में शिक्षक को सरलता होती है। प्रारंभिक कक्षाओं में क्लिष्ट शब्दों के उच्चारण कराने में कभी—कभी सामूहिक वाचन का आश्रय लेना पड़ता है। सामूहिक वाचन कराने का एक लाभ यह है कि संकोची छात्र सबके साथ पढ़ते—पढ़ते अपनी झिझक दूर कर लेता है और आगे चलकर वाचन का अभ्यास कर लेता है। कर्कश स्वर वाले छात्र शर्मिले या आत्मविश्वास की कमी वाले छात्रों को प्रारंभ सामूहिक पठन से लाभ होता है। किन्तु यह ध्यान रहे कि सामूहिक तरह—चौदह वर्ष तक की आयु के बालकों के लिए ही क्रिया जाए। छात्रों की संख्या बहुत अधिक न हो पड़ोस की कक्षा की शान्ति भंग न हो नही तो अनुशासन की समस्या खड़ी हो जायेगी। सस्वर वाचन के भेदों के नीचे तालिका के रूप में स्पष्ट किया जा रहा है—



वाचन में बालक अनेक अशुद्धियाँ करते हैं। वर्ण शब्दों तथा वाक्यों का शुद्ध उच्चारण स्वयं करके उनका अनुकरण वाचन कक्षा के विद्यार्थियों से करा लेना चाहिए। आदर्श पाठ में ध्वनि का आरोह-अवरोह शुद्ध उच्चारण भाव अभिव्यक्ति एवं उपयुक्त शारीरिक संकेतों को ध्यान रखकर अध्यापक को वाचन करना चाहिए क्योंकि वाचन पर ही पाठ ही सफलता निर्भर रहती है।

इससे अतिरिक्त सस्वर पाठ से छात्रों में आत्मविश्वास की भावना आती है। संकेत का आवरण हट जाता है। सस्वर वाचन से ही काव्य का आनन्द उठाया जा सकता है, लेकिन प्रभावशाली सस्वर वाचन तभी कहा जा सकता है जबकि वाचन में निर्णय की कशलता, उच्चारण की शुद्धता तथा भाव की स्पष्टता हो।

(पप) मौन वाचन

मौन वाचन भी सस्वर वाचन की तरह भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग है। सस्वर वाचन निपुणता प्राप्त कर लेने के पश्चात मौन वाचन की शिक्षा देनी चाहिए। मौन वाचन से पाठ शीघ्रता से पढ़ा जा सकता है और पाठ पढ़ते-पढ़ते पाठ शीघ्रता से समझ में भी आ जाता है। मौन वाचन से विद्यार्थी स्वावलंबी बनते हैं। उनमें पढ़ने की आदत पड़ती है। इससे छात्र-छात्राओं में स्वाध्याय की आदत का विकास होता है।

मौन वाचन का तात्पर्य

लिखित सामग्री का बिना कोई ध्वनि हुए मन-ही मन में शान्तिपूर्वक पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहते हैं। वास्तव में मौन वाचन पठन की ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें दृष्टि विराम के माध्यम से वाचन मन-ही मन में किया जाता है। इसमें नेत्रों के द्वारा वाचन सामग्री तीव्रता से पढ़ी जाती है। इसमें वाचन मानसिक धरातल पर होता है और मस्तिष्क तेजी से अर्थ ग्रहण करता है। इसमें वाचन करने वाले के होंठ तक भी नहीं हिलते। मौन वाचन के बारे में **रायबर्न** लिखते हैं। आरंभ में ही बालकों को प्रशिक्षित करना चाहिए कि वे अपने पाठ करते हुए वे होठों को ना हिलाएँ अन्यथा मौन वाचन सस्वर वाचन का ही रूप बनकर रह जाएगा और बालक कभी भी अपनी आँखों से पढ़ना नहीं सीखेगा।

मौन वाचन की उपयोगिता – वाचन (पठन) के व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए पहला सोपान सस्वर वाचन के रूप में होता है। परन्तु वास्तविक जीवन में विद्यालय की शिक्षा के बाद सस्वर वाचन की बहुत कम आवश्यकता होती है। अधिकांश रूप से हमें मौन पर ही निर्भर रहना पड़ता है। हम किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र (स्थान) में सस्वर वाचन नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसा करना न तो स्वयं का अच्छा लगता है और न ही दूसरों को अच्छा लगता है।

मौन वाचन की वास्तविक जीवन में बहुत उपयोगिताएँ हैं जो निम्न हैं—

1. मौन वाक्य तीव्र गति से होता है, इसलिए समय की बचत होती है।
2. मौन वाक्य से थकावट कम होती है।
3. मौन वाक्य से कम थकावट होने के कारण छात्र अधिक देर तक वाचन कर सकता है।

4. छात्र में एकाग्रता का विकास होता है।
5. अर्थ ग्रहण तीव्रता से किया जाता है।
6. गहन एवं विस्तृत अध्ययन साथ-साथ होता है।
7. संक्षेपीकरण में सहायक है।
8. स्वाध्याय क आदत का विकास करने में पूर्ण रूप से सहायक है।
9. समय के सदुपयोग के लिए बहुत सार्थक एवं सशक्त प्रक्रिया है।
10. गहन (सूक्ष्म) अध्ययन में बहुत सहायक है।
11. कम समय में अधिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

ब्राईन के अनुसार –निसंदेह मौन वाचन अपेक्षाकृत अल्पव्ययी साधन है। इसके साथ-साथ यह पद्धति जीवन की साधारण क्रियाओं के अत्याधिक अनुकूल है क्योंकि हमारा अधिकांश वाचन मौन रूप से होता है।

12. मौन वाचन सार्वजनिक स्थानों पर दूसरों की उपस्थिति में भी संबंध है।

मौन पठन के उद्देश्य

मौन पठन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. छात्रों में स्वाध्याय की आदत का विकास करना।
2. पठन गति बढ़ाना।
3. छात्रों में अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।
4. मुख्य बिन्दुओं को छोटकर कण्ठस्थ करने की योग्यता उत्पन्न करना।
5. मुख्य भावों की आत्मसात करने की योग्यता उत्पन्न करना।
6. शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
7. जिज्ञासा का समाधान करना।
8. भाषा की विभिन्न विधाओं के प्रमुख तत्वों से परिचित करना।
9. ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास करना।
10. अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करना।
11. कल्पना –शक्ति का विकास करना।
12. सृजानात्मकता की योग्यता का विकास करना

मौन पठन के महत्व

1. इससे छात्रों की पठन गति में तीव्रता आती है।
2. यह व्यक्तिगत आत्मशिक्षण है।
3. इससे समय व शक्ति की बचत होती है।
4. शारीरिक व मानसिक थकान कम होती है।
5. तथ्यों व मुख्य भावों को समझने में सहायक है।
6. एकाग्रता के कारण अन्य विषयों में सहसंबंध सम्भव है।
7. स्थायी स्मृति में वृद्धि होती है।
8. सृजानात्मक-शक्ति का विकास होता है।

मौन पठन के प्रकार

पठन की प्रकृति के अनुसार मौन पठन के दो भेद किये जा सकते हैं—

1. गंभीर पठन अथवा गहन पठन।
2. दुत पठन।
1. **गंभीर पठन अथवा गहन पठन**—बेकन के द्वारा—कुछ पुस्तकें गहन अध्ययन की दृष्टि से पढ़ी जाती हैं, कुछ केवल निगल ली जाती हैं और कुछ केवल स्वाद के लिए पढ़ी जाती हैं। बेकन के उपयुक्त कथन से भी स्पष्ट होता है कि मौन पठन के दो प्रकार हैं—
(प) गंभीर पठन (पप) गहन पठन।
गंभीर अथवा गहन पठन उस विषयवस्तु का किया जाता है जो सारगर्भित तथ्यात्मक तथा क्लिष्ट भाषा में बुद्धि होती है जिसमें अधिक चिन्तन की आवश्यकता होती है। उदाहरण माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर चलने वाली भाषा की पाठ्यपुस्तकों के पठन हेतु छात्रों को गहन पठन करने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
2. **दुत पठन**—दुत पठन जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि शीघ्रता से किया जाने वाला पठन। इसमें विषयवस्तु सरल व बोधगम्य होती है। उसका उद्देश्य छात्रों का मनोरंजन करना, अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करना व सीखी हुई भाषा का अभ्यास करवाना है, जैसे संस्कृत की वे कथाएँ जो हितोपदेश व पंचतंत्र आदि में संग्रहीत हैं तथा संस्कृत में निकलने वाली पत्रिकाएँ जैसे—चंदामामा सम्भाषण संदेश आदि का द्रुत पढ़ने के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाना चाहिये। मौन पठन की उपयोगिता केवल छात्र जीवन तक ही सीमित नहीं है अपितु यह जीवन-पर्यन्त चलने वाली शिक्षा के लिए भी व्यवहारिक है।

मौन पठन कब करवाया जाए—प्रारंभिक स्तर पर सस्वर वाचन ही अधिक उपयुक्त होता है जैसे—जैसे बालक शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्व होता जाता है वैसे—वैसे उसमें स्वाध्याय की आदत का विकास होता है तब वह मन में पढ़कर विषय की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता है। इस विषय में जुड (jude) ने कहा है—अध्यपकों को यह बात अच्छी प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि उच्च कक्षाओं में वचन की सबसे अच्छी विधि मौन वाचन ही है। जब कोई बालक चलना सीखता है तब खिसकना छोड़ देता है।

वह मौन वाचन में निपुणता प्राप्त कर लेता है तब सस्वर वाचन की आदत छोड़ देता है।

निष्कर्ष—उच्च माध्यमिक व उच्च स्तर पर मौन पठन अधिक उपयुक्त है।

मौन पठन दक्षता तथा उसके लक्षण—

1. पठन दक्षताविहीन पाठक मन्द गति से पढ़ता है।
2. वह देर से समझता है।
3. वह शब्दों को बार—बार पढ़ता है।
4. वह एक—एक शब्द पढ़ता है।
5. अपना सिर या आँख की पुतलियों घुमाता है।
6. मन्द पाठक आँखों, सिर, जिहा, और ज्ञेन्द्रियों का भी प्रयोग करता है।

बाधक तत्व—

1. पढ़ने की कला का अभाव।
2. दृष्टि परिधि एवं विस्तार का अभाव।
3. पठन रुचि का अभाव।
4. बहिर्मुखी प्रवृत्ति अर्थात् मन की एकाग्रता का अभाव।
5. चिन्तन का अभाव।

मौन पठन कैसे कराया जाए?

1. मौन पठन हेतु सर्वप्रथम वातावरण को पूर्ण शांत बनाया जाए।
2. छात्रों में ध्यान केन्द्रित करने की आदत डाली जाए।
3. इसका नियमित अभ्यास करवाया जाए।
4. उपयुक्त पाठ्य-सामग्री का चयन किया जाए जैसे-सामाजिक, सांस्कृतिक
5. मौन पठन से पूर्व छात्रों को कहाँ तक पढ़ना है? किन बिन्दुओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना है-यह स्पष्ट कर दिया जाए।
6. मौन पठन प्रारंभ करवाने के लिए शिक्षक कक्षा का चुपचाप निरीक्षण करें।
7. जिस अवतरण का मौन पठन करना है उसका सस्वर पठन एक बार कक्षा में अवश्य करवा दिया जाए।
8. उस विषयवस्तु के क्लिष्ट शब्दों के अर्थ, मुख्य भाव तथा लेखक के आशय की अनुभूति पूर्व में ही स्पष्ट कर दी जाए।
9. वाच्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ का ज्ञान करना दिया जाए।
10. मौन पठन का अभ्यास जब कुछ परिपक्व होने लगे उस समय छात्रों को पहले की अपेक्षा कम समय देकर उतने ही समय में अधिक मात्रा में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

मौन पठन का मूल्यांकन – 1. मौन पठन की सफलता के मूल्यांकनार्थ छात्रों से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे जाएँ जैसे-

(प) रिक्त स्थानों की पूर्ति संबंधी

(पप) सत्यासत्य/हाँ अथवा नहीं संबंधी ,

(पपप) मिलान पद संबंधी

(पअ) बहुविकल्पात्मक,

(अ) लघुत्तरात्मक।

2. पठित अंश का सार अपने शब्दों में लिखवाया जाए अथवा सुना जाए।

3. पठित अंश में से कुछ शब्द देकर पूर्ति करने को कहा जाए अथवा उन शब्दों के आधार पर पाठ के विषय में अपने विचार प्रकट करने को कहा जाए।

मौन पठन में सुधार के सुझाव

1. यक्षुगति एवं पठन में सामंजस्य स्थापन का अभ्यास करवाया जाए।
2. चक्षुगति के बढ़ने के साथ-साथ पठन गति बढ़ा दी जाए।
3. बालक एक दृष्टि विक्षेप में जितना देखे उतना पढ़ सके।

4. जितना पढ़े उनता समझता चले।
5. जो समझे उसे स्मरण रखे।
6. जो स्मरण रखे उसका यथोचित प्रयोग करें।

शिक्षा —जगत में वाचन की शिक्षा के लिए अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं—

1. देखों और कहो विधि।
2. अक्षर—बोध विधि।
3. ध्वनि—साम्य विधि।
4. अनुध्वनि विधि।
5. भाषा—शिक्षण की यन्त्र विधि
6. स्मावेत पाठ विधि।
7. संगति विधि।
1. **देखो और कहो विधि**—इस विधि में एक पूरा शब्द श्याम पट्ट पर लिख दिया जाता है और अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान कराई जाती है। इस प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि अव्यवहत शब्दों के रूप और प्रयोग में धोखा हो जाता है। एक तो शब्दों की संख्या अपरिमित होती है—कहाँ तक उसका परिचय कराया जाये। दूसरी बात यह कि थोड़ी—सी सावधानी से मर्म का धर्म अथवा धर्म का मर्म पढ़ा जा सकता है। अतः यह विधि त्याज्य है।
2. **अक्षर —बोध विधि**— इसमें वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सज्जित है। जब वर्ण पहचान लिया जाता है तो बालक को शब्द दे दिया जाता है: जैसे— क,म,ल, अक्षरों से मिलकर कमल शब्द इस विधि में इस प्रकार ऐसा अभ्यास कराया जाये कि छात्र की दृष्टि परिधि सध जाये। अक्षर का स्वरूप उसे स्थिर न करना पड़े वरन देखते ही शब्द का स्वयं उसकी दृष्टि पकड़ ले।
3. **ध्वनि—साम्य—विधि**—इसमें एक समान उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं। जैसे—श्रम क्रम भ्रम आदि इनमें जान बुझकर बालकों को ऐसे शब्द सीखने पड़ते हैं। जिसको वह अपने व्यवहार में नहीं पाते। जैसे—चर्म कर्म, गर्म, वर्म, तथा मर्म आदि। इनमें कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका बालक तदभव रूप में प्रयोग करते हैं, अतः यह विधि भी असंगत तथा त्याज्य है।
4. **अनुध्वनि विधि**—यह भी देखों और कहो विधि का रूपान्तर मात्र ही है। अन्तर केवल इतना है कि इसमें एक समान उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ ही सिखाए जाते हैं। और छात्र उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करता है। इसका प्रयोग अधिकतर उन भाषाओं में होता है, जिनमें एक अक्षर की अनेक ध्वनियाँ हो अथवा लिखा कुछ जाय, पढ़ा कुछ जाय जैसे—अंग्रेजी भाषा में put, cut, but में ँ अक्षर एक ध्वनि में देक उ,क,+अ,व+अ की ध्वनि से उच्चारित है, परन्तु नागरी में यह प्रश्न नहीं उठता।
5. **भाषा —शिक्षण की यन्त्र—विधि**—यह एक नवीन विधि है। इसमें ग्रामाफोन के एक तबेमें एक पाठ भरा रहता है। जिसे सुनकर बालक उसी का अनुकरण करके पढ़ने का अभ्यास करते हैं। इससे उच्चारण में एकारूपता और पढ़ने के क्रम में समता आ जाती है लेकिन अभी तक नागरी शिक्षा के लिंग्वाफोन के तबे नहीं बन पाये हैं और बनने पर सभी स्थानों पर प्राप्त हो सकेंगे इसमें भी सन्देह है, साथ ही यह अधिक व्यवसाध्य और दुर्लभ हैं, अतः त्याज्य है।
6. **स्मवेत पाठ विधि** —इस विधि से छोटे पद्य तथा गीत सिखाने में सुविधा होती है। अध्यापक पाठ के एक अंश को स्वयं भावपूर्ण रीति से पढ़ता है और कक्ष के सब विद्यार्थी एक साथ उसकी

आवृत्ति करते हैं। ऐसा करने में स्वर साधता है और वाचन संस्कार दृढ़ हो जाता है। अतः यह विधि कुछ सीमा तक लाभकारी है।

7. **संगति विधि**—इस विधि का प्रयोग मॉण्टेसरी ने किया था। इसमें बहुत —सी वस्तुओं, चित्रों खिलौने आदि के आगे उनके नाम कार्डों पर लिखकर रखे जाते हैं। वे कार्ड फेक दिये जाते हैं और बालकों से कहा जाता है कि जिस वस्तु का जो नाम है वह नाम वाला कार्ड उसी वस्तु के आगे रख दिया जाए। खिलवाड़ मात्र होने के कारण विधि को शिक्षा में सम्मिलित नहीं किया जाता।

बोलने का शिक्षण

वचन का अर्थ—वाचन एक कला है। वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी सुसंस्कृत एवं मधुर वाणी है, क्योंकि अन्य सभी आभूषण तो टूट या घिस जाते हैं किन्तु वाणी सदा बनी रहती है व्यक्ति का एक मात्र आभूषण उसकी मधुर वाणी है। अमृत भी मधुर वाणी में ही होता है। मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को बोलकर अथवा लिखकर व्यक्त करता है। भावों एवं विचारों का सम्प्रेषण या प्रकाशन ही रचना है। अतः रचना के दो मुख्य रूप हैं— मौखिक रचना एवं लिखित रचना वशीकरण एक मन्त्र है—परिहर वचन कठोर।

कैथरीन ओकनर के अनुसार—वाचन वह जटिल सीखने की प्रक्रिया है, जिसमें सुनने के गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्षों से संबंध होता है।

भाषाओं के विश्लेषण से विदित होता है कि उनके अक्षरों की ध्वनियाँ विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार से निकलती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अक्षर ध्वनि परिस्थिति अनुसार बदल जाती है। इसलिए इन भाषाओं के विद्वानों ने शुद्ध उच्चारण के लिए नियमों को प्रतिपादित किया है, परन्तु हिन्दी देवनागरी लिपि में ऐसा नहीं है अक्षरों की ध्वनियाँ नहीं बदलती हैं। इसलिए हिन्दी के शिक्षकों को भाषा सिखाने अथवा वाचन के लिए अलग से आवश्यकता नहीं होती। वाचन में शब्दों के उच्चारण का विशेष महत्व होता है। शब्दों का शुद्ध उच्चारण होना चाहिए।

भाषा शिक्षण वाचन एवं लिखने से आरंभ किया जाता है। इस संबंध में सभी एकमत नहीं हैं। मॉण्टेसरी शिक्षा प्रणाली लिखने से आरंभ करने के पक्ष में है परन्तु अन्य सभी वाचन से आरंभ करने के पक्षधर हैं क्योंकि ध्वनि से ज्ञान सरल है। लिखने से बोलना सरल होता है। लिखने से ध्वनि और लिपि के रूप को समझने में समय भी लगता है। लिपिबद्ध शब्दों को सरलता होता है। लिखने से ध्वनि और लिपि के रूप को समझने में समय भी लगता है। लिपिबद्ध शब्दों को सरलता से पढ़ाया जा सकता है।

वाचन की आवश्यकता एवं महत्व—वाचन का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्व है। बिना वाचन के मनुष्य पशु के समान है। यद्यपि गूंगे व्यक्ति भी संकेतो से सम्प्रेषण करने में सक्षम होते हैं। संकेत भी एक भाषा है। इसे सांकेतिक भाषा या शरीर-भाषा भी कहते हैं। कक्षा शिक्षण में शब्दिक तथा अशब्दिक अन्तः क्रिया दोनों का ही प्रयोग किया जाता है। कक्षा के अतिरिक्त किसी विशेष परिस्थिति में व्यक्ति को मूक होना पड़ता है। क्योंकि अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए उचित शब्द नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में हाव-भाव से अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करता है। अधिक दुःख में नेत्र सजल हो जाते हैं।

जीवन की अधिकांश परिस्थितियों में वाचन का प्रयोग किया जाता है। यहाँ इसकी आवश्यकता एवं महत्व का विवेचन किया गया है—

1. वचन व्यक्तिगत के विकास का श्रेष्ठतम साधन हैं। आत्म प्रकाशन मनुष्य आवश्यकता है। अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति से सन्तुष्टि होती है। बिना अभिव्यक्ति के व्यक्ति अनेक ग्रन्थियों एवं मानसिक कुठाओं से पीड़ित हो जाता है।
2. दिन प्रतिदिन के जीवन निर्वाह में व्यवहार में वाचन का विशेष महत्व है मधुर वाचन के सामाजिक क्षेत्र में स्थान बनता है। लिखित भाषा की अपेक्षा वाचन अधिक प्रयुक्त किया जाता है।
3. लिखित भाषा को सीखने के लिए वाचन का विशेष महत्व है। अक्षरों को सीखने के लिए अक्षर की ध्वनि के उच्चारण की सहायता ली जाती है। बिना वाचन के भाषा ज्ञान अधूरा माना जाता है। गूंगा तथा बाधिर व्यक्ति लिखना सीख लेता है। परन्तु वह बोल नहीं सकता। उसके लिए भाषा का ज्ञान बिना वाचन के अधूरा ही रहता है। वह सुन भी नहीं सकता।
4. शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन सभी शिक्षण स्तरों पर वाचन के माध्यम से किया जाता है। बिना वाचन के शिक्षा प्रक्रिया का संचालन सम्भव नहीं है। मानव विकास भी संभव नहीं है।
5. वाचन में हाव-भाव स्वरों, आरोह-अवरोह वाणी की मधुरता शुद्ध शब्दों का उच्चारण हाथों की गतिविधियों नेत्रों की गति मुख मुद्राओं का विशेष महत्व है। इनमें सम्प्रेषण में एक अदभुत शक्ति, सजीवता और हृदय स्पर्शिता प्राप्त होती है। यह कथन सत्य है शब्दों से व्यक्त करने की शैली से शक्ति का संचार होता है। शब्दों की शक्ति से सामाजिक कुरीतियों तथा व्यक्तियों में परिवर्तन सम्भव है। बालक का समुचित विकास किया जा सकता है।

वाचन की शिक्षण विधियाँ

वाचन शिक्षण में अनेक विधियों को प्रयुक्त किया जाता है यहाँ वाचन की प्रमुख विधियों का उल्लेख किया गया है—

1. अक्षर बोध विधि,
2. देखो और कहो विधि,
3. अनुकरण विधि ,
4. ध्वनि समय विधि,
5. वाक्य शिक्षण विधि।
6. संगीत विधि
7. भाषा-शिक्षण की तकनीकी विधि आदि।

मनोवैज्ञानिक की दृष्टि से वाचन विधियों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।—

1. विश्लेषात्मक विधिया
2. समाधरक विधियाँ
3. संश्लेषण विधि।
1. **विश्लेषणात्मक** विधियों में शब्द विधि वाक्यांश विधि तथा वाक्य विधि को सम्मिलित किया जाता है। शब्द विधि में देखो ओर कहो विधि का विशेष महत्व है।

2. **संश्लेषणात्मक** विधियों में वर्णमाला विधि ध्यानत्मक विधि और अक्षर विधि को सम्मिलित करते हैं। वाचन की दृष्टि से अक्षर विधि का विशेष महत्व है। इसका वर्णन यहाँ पर किया गया है।

1. **अक्षर बोध विधि**— यह सबसे प्राचीन शिक्षण विधि है। इसमें सर्वप्रथम स्तर तथा व्यंजन शब्दों को पढ़ाया जाता है। इस विधि में अक्षर की ध्वनियों को प्रधानता दी जाती है। स्वर शिक्षा में बालक को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाता है। इसके बाद बालक स्वर एवं व्यंजन का मिलान सीखता है। यही मिलान वाक्यों की रचना में सहायता करता है। बालक पूर्ण वाक्य की रचना करके वाचन करने लगता है। अक्षरों का मिलान सिखाया जाता है। इसके बाद शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाया जाता है। अक्षर बोध विधि से बालकों का उच्चारण शुद्ध होता है। अक्षर शब्द तथा वाक्य का क्रमबद्ध ज्ञान होता है। अक्षरों में स्वरों व व्यंजनों को मिलाने से नये शब्दों की रचना होती है। इस विधि से व्याकरण तथा भाषा संबंधी नियम का बोध भी सरलता से होता है।

इस विधि का दोष यह है कि ध्वनि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अक्षर स्वरूप दको महत्व नहीं देते हैं। बिना स्वर के व्यंजनो को निरर्थक मानते हैं। इस विधि में अक्षर-बोध में अधिक समय लगता है। बालकों में सीखने की रुचि उत्पन्न नहीं होती है।

2. **देखो और कहो विधि**—इस विधि में अक्षरों के बोध में स्थान पर शब्द बोध कराया जाता है। चित्र देखकर बालक को स्वयं ही उस शब्द का ध्यान आ जाता है। चित्र ऊपर अथवा नीचे बना रहता है। उसे देखें और कहो। बालक देखकर समझने का प्रयास करता है। फिर बोलता है। चित्र बालक के परिचय की परिधि में हो इसलिए बालकों के स्तर की वस्तुओं के चित्र तैयार किए जाते हैं उन्हें का प्रयोग किया जाता है। चित्रों को श्यामपट्ट पर भी बनाया जा सकता है।

इस विधि की विशेषता है—रोचकता आकर्षण और मनोहरता चित्रों के साथ शब्द चित्र बालकों के मानसिक पटल पर छा जाते हैं। इन शब्दों और चित्रों के आधार पर वर्णमाला का ज्ञान भी दे दिया जाता है। इसमें क्रिया विपरीत होती हैं बालक शब्दों को सीखने के बाद उनके अक्षरों को सीखता है। इस विधि से प्रचलित शब्दों का वाचन सरलता से सीख जाते हैं। परन्तु क्रिया एवं भाव संबंधी शब्दों के चित्र नहीं बनाये जा सकते हैं। यह विधि अंग्रेजी के वाचन शिक्षण के लिए अधिक उपयुक्त है। हिन्दी भाषा में वाचन शिक्षण के लिए अधिक उपयोगी नहीं है।

3. **अनुकरण विधि**—बालक अनुकरण विधि से ही अधिक सीखते हैं परन्तु हिन्दी में अंग्रेजी की अपेक्षा कम उपयोगी है। हिन्दी में प्रत्येक अक्षर की ध्वनि निश्चित है जबकि अंग्रेजी अक्षर की ध्वनि निश्चित नहीं है। एक ही अक्षर डी का प्रयोग (द) तथा (ड) दोनों ध्वनियों के लिए होता है।

शिक्षक के आदर्श वाचन का अनुकरण जीवन पर्यान्त छात्रों के काम आता है। शिक्षक के उच्चारण के अनुकरण से ही बालक शुद्ध उच्चारण सीखते हैं। जिससे वाचन में शुद्धता आती है और भावपूर्ण वाचन सीखता है अनुकरण विधि के लिए शिक्षक के वाचन में भावपूर्ण और शुद्ध उच्चारण आना आवश्यक होता है।

सामूहिक वाचन प्रविधि—द्वारा अनुकरण विधि को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। कविताओं एवं गीतों को सीखने में सामूहिक अभ्यास कराया जाता है। कठिन शब्दों को सामूहिक उच्चारण के अभ्यास

से वाचन को भावपूर्ण तथा शुद्ध किया जा सकता है। संस्कृत भाषा के शिक्षण में भी इसका प्रयोग किया जाता है। सामूहिक वाचन में बालक स्वाभाविक रूप से शुद्ध उच्चारण कर लेता है।

4. **ध्वनि समय विधि**— इस विधि के अन्तर्गत ध्वनि की सरलता रखने वाले शब्दों को साथ-साथ सिखाया जाता है। एक-सी ध्वनि के कारण छात्र एक साथ सरलता से सीख लेते हैं। जैसे—धर्म, कर्म गर्म में समान ध्वनि होती है, इसी प्रकार क्रम श्रम, भ्रम शब्दों में समान ध्वनि है। इस विधि में कभी-कभी अनावश्यक शब्द भी सीखने पड़ जाते हैं जिन्हें हम प्रयोग में नहीं लाते हैं। तथा कुछ अशुद्ध भी होते हैं। इस विधि का प्रयोग सीमित शब्दों के उच्चारण सिखाने में ही किया जाता है। वाचन में इस विधि का उपयोग सीमित है।
5. **भाषा शिक्षण की तकनीकी विधि**—आज शिक्षण के क्षेत्र में शिक्षा-तकनीकी का विकास हुआ है। इनके परिणामस्वरूप शिक्षण में मशीनों तथा चित्रों का प्रयोग किया जाने लाता है। भाषा प्रयोगशाला का भी विकास हुआ है। इस प्रयोगशाला में वाचन तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण का विकास किया जाता है। इसके अतिरिक्त रेडियों, दूरदर्शन, ग्रामाफोन टेप-रिकार्डर आदि के द्वारा भी वाचन तथा भाषा सीखते हैं। भाषा शिक्षण के लिए आडियों टेप तथा वीडियों टेप का निर्माण किया गया है।

दूरदर्शन तथा रेडियो छात्रों को विशिष्ट व्यक्तियों के भाषण सुनने में सहायक लेते हैं। इनमें क्रमबद्धता भाव-विभोरता भाषा का चयन तथा वाचन शैली का अनुकरण करते हैं। बालक संगीत को सुनकर तथा चित्रहार स्वाभाविक रूप में स्मरण कर लेते हैं। दूरदर्शन पर शिक्षण-संबंधी कार्यक्रम आने लगे हैं। प्रातः काल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा इन्दिरा गॉंधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षण कार्यक्रम आते हैं जिसे दूरवर्ता शिक्षा कहते हैं। आजकल तो कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन का प्रयोग भाषा शिक्षण में सफलता पूर्वक किया जा सकता है।

6. **कहानी विधि**— कहानी विधि में बालक अधिक रुचि लेते हैं। कहानी को चार-पाँच वाक्यों में पूर्ण से करके सुनानी चाहिए। चित्रों की सहायता से कहानी विधि अधिक प्रभावशाली होती है। चित्रों को देखकर वाक्य को पढ़कर कहानी का पूर्ण-ज्ञान रोचकता से हो जाता है। भाषा प्रवाह कहानी से ही विकसित होता है। कहानी विधि में छात्र अनुकरण से सीखते हैं। कहानी कहते समय भाषा की शुद्धता तथा भाव पक्ष को भी ध्यान में रखना चाहिए। कहानी विधि से वाचन सीखते हैं तथा मनोरंजन भी होता है। कहानी विधि से उत्सुकता बढ़ती है। और प्रेरणा मिलती है।
7. **वाक्य-शिक्षण विधि**—अक्षर बोध विधि में अक्षर की ध्वनि से देखों ओर कहो विधि में शब्दों में शिक्षण आरंभ करते हैं। वाक्य विधि में शब्दों से आरंभ न करके वाक्यों से शिक्षण आरंभ किया जाता है। इस विधि में शिक्षण क्रम अवरोही होता है। वाक्य-से शब्द -अक्षर बोध विधि में अवरोही क्रम अक्षर-से शब्द से वाक्य का प्रयोग किया जाता है। लिखने तथा पढ़ने की पूर्व ही बालक बालक पूर्ण वाक्य बोलता और सुनता है। इसलिए शिक्षण वाक्य से करना मनोवैज्ञानिक प्रतीत होता है। आरंभ से वाक्यों का स्वरूप दो शब्दों का फिर तीन शब्दों का होना चाहिए।

श्रावण कैशल का अभिप्राय

श्रावण कौशल का अर्थ

श्रवण अन्य व्यक्ति के द्वारा उच्चारण की हुई ध्वनियों शब्दों भावों ओर विचारों को से अभिप्राय यह है कि किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उच्चारण की हुई ध्वनियों शब्दों भावों ओर विचारों को कानो से सुनकर अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को श्रावण कहा जाता है। वह कौशल को सीखने का प्रथम सोपान है और अन्य कौशल की सीखने के लिए आधार बनता है। कोई भी वक्ता जिस अभिप्राय या अर्थ को लेकर अपने विचारों और भावों की मौखिक रूप से अभिव्यक्ति करता है, उनको उसी रूप में सुनकर अर्थ समझने की योग्यता को श्रवण कौशल कहा जाता है।

श्रवण कौशल की आवश्यकता एवं महत्व (need and importance of listening skill)—बालक के व्यक्तित्व के विकास और भाषा शिक्षण की दृष्टि से श्रवण कौशल का बहुत आवश्यक व महत्व है। प्रत्येक बालक जन्म के उपरान्त विभिन्न ध्वनियों की सुनना प्रारंभ कर देता है। इन ध्वनियों से उसका मस्तिष्क प्रभावित होने लगता है। ये ध्वनियों बालक के भाषा ज्ञान के लिए आधारशिला का कार्य करती है। ध्यान से सुनने पर ही बालक इन ध्वनियों के अन्तर को समझने लगता है। श्रवण कौशल को अन्य भाषायी कौशल के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बालक परिवार में रहते हुए अपने से बड़े सदस्यों को बोलते हुए देखकर उनका अनुसरण करता है और इस प्रकार से वह मौखिक अभिव्यक्ति भी करने लग जाता है।

हमें यह नहीं समझना चाहिए कि श्रवण कौशल केवल मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है बल्कि इससे पठन कौशल और लेखन कौशल का भी विकास होता है। उदाहरण के रूप में शिक्षण द्वारा आदर्श वाचन सुनकर बालक उसका अनुसरण करके वाचन करने लग जाता है। श्रवण कौशल विकास से लेखन कौशल का विकास भी संभव है क्योंकि बालक शिक्षण द्वारा बोले गये शब्दों को सुनकर ही लिखता है। यह देख गया है कि जो बालक ध्यान से नहीं सुनते वे लिखने में भी पीछे रह जाते हैं। इस प्रकार श्रवण कौशल अन्य भाषायी कौशल का विकास करने की दृष्टि से और भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भी आवश्यक है। इन सब बातों के अतिरिक्त श्रवण कौशल के द्वारा ही विभिन्न साहित्यिक क्रिया—कलापों का आनन्द प्राप्त किया जा

श्रवण कौशल के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में सुनकर समझने की योग्यता का विकास करना।
2. श्रुत सामग्री में से अच्छी बातों के चयन करने की योग्यता का विकास करना।
3. सुनी हुई सामग्री की विशेष बातों को समझे।
4. वे समाज में दूसरी की बातों को सुनकर उनके अर्थ ग्रहण करें।
5. ध्वनियों और शब्दों के शुद्ध उच्चारण को ध्यानपूर्वक सुनकर उनका सही अनुसरण करना सीखें।
6. स्वराघात बालाघात और स्वर के आरोह—अवरोह समझे और उनका सही ढंग से अनुकरण करना सीखें।
7. सुनी हुई सामग्री के मर्मस्पर्शी स्थलों के पहचानने तथा अनुभव करने की क्षमता का विकास करना।
8. मौखिक अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियों को समझने और उनका प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
9. इस कौशल के द्वारा साहित्यिक रुचियों का विकास करना।
10. मानसिक और बोद्धिक के विकास के लिए प्रेरित करना।
11. वक्ता के भावों, विचारों में निहित गूढ़ रहस्यों को समझने की योग्यता का विकास करना।

श्रवण कौशल की शिक्षा की विधियाँ

श्रवण कौशल की शिक्षा की निम्नांकित विधियाँ हैं जो अग्रसरा निम्नलिखित हैं—

1. **सस्वर वाचन**—शिक्षण के द्वारा किये आदर्श वाचन और कक्षा के किसी छात्र द्वारा किये जाने वाले अनुकरण को ध्यानपूर्वक सुनकर शुद्ध उच्चारण बालघात, गति आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसमें शिक्षक को यह पता चलता रहेगा कि छात्र-छात्राओं का श्रवण कौशल किस दिशा में कितना विकसित कर रहा है।
2. **श्रुत लेखन**—श्रुत लेखन शुद्ध —लेखन के अभ्यास हेतु सशक्त और सार्थक विधि है। इस विधि का प्रयोग श्रवण कौशल के विकास के लिए करना भी उपयुक्त रहता है। श्रुत —लेखन में विद्यार्थी को सुनकर लिखना पड़ता है। परन्तु जो विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनेगा वहीं समस्त सामग्री को शुद्ध लिख सकेगा। जो विद्यार्थी ध्यान से नहीं सुनेगा तो वह समस्त सामग्री को लिखने में सफल नहीं हो सकेगा। ध्यान से न सुनने के कारण लिखने में कुछ-न-कुछ अवश्य ही छूट जायेगा।
3. **भाषण**— भाषण बालकों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सर्वश्रेष्ठ साधन है। भाषण श्रवण का विकास करने के लिए भी उत्तम साधन है। बालकों को पहले ही यह बता देना चाहिए कि वे भाषण की ध्यानपूर्वक सुने क्योंकि बाद में उनसे प्रश्न पूछे जाएँगे और उन्हें इन प्रश्नों का सही-सही उत्तर देना होगा। ऐसी स्थिति में प्रश्नों का उत्तर देने हेतु सभी छात्र भाषण को ध्यान से सुनते हैं।
4. **वाद विवाद**— श्रवण कौशल का विकास करने की दृष्टि से वाद-विवाद लाभप्रद एवं सार्थक क्रिया है क्योंकि जो विद्यार्थी इस क्रिया में भाग लेते हैं। उनको प्रत्येक बात को ध्यान से सुनना पड़ता है। अगर वह ऐसा नहीं करता है तो वह प्रतिपक्षी वक्ता की बातों का उत्तर देने में सक्षम नहीं होगा। वाद-विवाद के समापन के बाद समस्त कक्षा में प्रश्न पुछने चाहिए जिससे श्रवण कौशलों के विकास का परीक्षण हो जाएगा।
5. **प्रश्नोत्तर विधि**— यह विधि जिससे श्रवण-कौशल के विकास का परीक्षण हो जाएगा। विकास के साथ-साथ बालकों से प्रश्न पुछने चाहिए या यूँ कहिए की पाठ का विकास प्रश्नोत्तर विधि से किया जाए। ऐसा करने से कक्षा के सभी छात्र-शिक्षक को ध्यान से सुनते हैं और कक्षा में समाधान रहते हैं।
6. **कहानी कहना और सुनना**— इससे श्रवण कौशल के साथ-साथ मौखिक कौशल का भी शिक्षण होता है। शिक्षक बालकों में बैठकर उनको सर्वप्रथम कहानी सुनाता है और बालक शिक्षक को ध्यानपूर्वक सुनते हैं। शिक्षक स्वयं कहानी सुनाने के बाद बालकों से कहता है कि उनमें से कोई बालक कहानी सुनाए। ऐसा करने से पता चल जाती है कि बालकों ने कहानी ध्यान से सुनी है या नहीं। कहानी कहना श्रवण कौशल-शिक्षण का सशक्त एवं प्रभावपूर्ण साधन है, क्योंकि छोटे बालक कहानी सुनने में बहुत आनन्द प्राप्त करते हैं।
7. **श्रव्य —दृश्य सामग्री का उचित प्रयोग**—श्रव्य दृश्य सामग्री के यथा आवश्यकता प्रयोग करने से श्रवण-कौशल शिक्षण एवं विकास में पूर्ण सहायता मिलती है जैसे—

(प) **ग्रामोफोन**—ग्रामोफोन श्रवण-कौशल का विकास करने में बहुत लाभकारी है। इसके द्वारा बालक कहानी। कविता नाटक आदि सुनकर साहित्य की ओर आकर्षित होते हैं। शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से भी ग्रामोफोन बहुत लाभदायक श्रव्य सामग्री है।

(पप) **टैप-रिकार्डर**—इसके द्वारा साहित्यिक गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम को रिकार्ड करके कम्प्यूटर भी सुना जा सकता है। इस प्रकार के कार्यक्रमों को सुनने के बाद छात्र-छात्राओं से विषय से सम्बन्धित

वार्तालाप किया जा सकता है। और इस प्रकार से विद्यार्थियों के श्रवण-कौशल की जाँच भी की जा सकती है।

(पपप) चलचित्र—चलचित्र मनोरंजन के साधनों के साथ श्रावण विकास में भी सहायक सिद्ध होते हैं। इनका संबंध केवल सुनने मात्र से नहीं बल्कि जो कुछ सुनते हैं। उसको दृश्य रूप में देखा भी जा सकता है। शिक्षक के उचित मार्ग— दर्शन से हमें भाषा के शिक्षण के प्रयोग में लाया जा सकता है। बालक चलचित्र देखने के साथ-साथ ध्यान से सुनते भी हैं। इसलिए श्रवण कौशल के विकास हेतु चलचित्र एक अच्छा सशक्त एवं सार्थक—साधन हैं। जिसे बालक बहुत पसन्द करते हैं।

(पअ) दूरदर्शन—दूरदर्शन आज के विज्ञान की अनोखी देने है जो अनेक दृष्टिकोण से उपयोगी है। वह श्रवण-कौशल का विकास करने हेतु दिलचस्प साधन भी है।

(अ) वीडियो—जिस प्रकार टेप-रिकार्डर का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार किसी कार्यक्रम विशेष या प्रोग्राम विशेष को वीडियो के द्वारा रिकार्ड करके उसको टी.वी. पर दिखा सकते हैं। इसके माध्यम से विद्वानों के भाषणों और विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों की कैसेट तैयार की जा सकती हैं। जब बालक इनको बाद में सुनते हैं और देखते हैं तो केवल श्रवण-कौशल शिक्षण की दृष्टि से ही लाभ नहीं बल्कि अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी बालक बहुत कुछ सीखते हैं।

श्रवण कौशल –विकास

(developing listening skills)

1. **ध्वनि अभिज्ञान तथा ध्वनि अन्तर-बोध**—समान, असमान ध्वनियों, वाले शब्दों, पद बन्धों , वाक्यों का बार-बार श्रवण कराना यथा—

सदा—साधा—सादा—साधा, साधा—सादा, साधा—सदा

दान—धान दान—धान धान—दान धान—दान

बद—बध बद—बध बध—बद बध—बद

दानी—धानी, धानी—दानी दानी—धानी, धानी—दानी

आपका दान आपका धान, आपका—धान—आपका दान

दान का धार कहाँ है? धान का दान दे

धनवान का दान कहाँ है? दानदाता धनवान कहाँ हैं?

2. **अर्थ बोध हेतु**—कोशलगत तथा संरचनागत अर्थ-बोध के लिए शब्दों वाक्यों का बार-बार श्रवण करना यथा—(चित्र प्रदर्शनी के साथ)—पेड़, फूल, पत्ती, फल, झाड़ी, गाय, बकरी , कुत्ता, गधा, घोड़ा।

(समानार्थी शब्दों का श्रवण)—घर मकान, ग्रह आकाश, आसमान नभ, चोंद , चन्द्रमा, राशि।

(विलोमार्थी शब्दों का श्रवण)—बुराई—भलाई पश्चिम पूरब बड़ा—छोटा हानि—लाभ , गरीब—अमीर भलाई—बुराई पुरब—पश्चिम छोटा—बड़ा , लाभ हानि, अमीर—गरीब।

सम्बद्धता स्थापित करके वह बिल्ली शब्द अर्थ जान जाता है। इसी प्रकार जब बालक को यह बताया जाता है। कि अमुक व्यक्ति उसका माना या दादा है तो उन जैसे—सभी व्यक्तियों को वह माना और दादा ही समझता है, सम्बद्धता के विकास के साथ-साथ बालक नये-नये अर्थों को सीखता जाता है।

बोलना सीखने में प्रेरणा (motivation) का बड़ा महत्व है। यदि बिना बोले ही बालक की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं तो वह बोलने का प्रयास नहीं करेगा। यदि बालक की आवश्यकताएँ रों से अथवा तुलानात्मक बोलने से पूरी हो जाती हैं, तो वह सही बोलने का प्रयास नहीं करता। बालक को बोलने के प्रेरित करने वाली आवश्यकताओं में मुख्य है अपनी आवश्यकताओं को बताना, मन में आये हुए विचारों को प्रकट करना, जिज्ञासा की शान्ति करने के लिए वातावरण संबंधी सूचनाएँ प्राप्त करना तथा अन्य बालकों से सामाजिक संबंध स्थापित करना/ बालको को उपर्युक्त प्रेरणा बोलना सीखने में उसकी सहायता की जा सकती है।

शब्द की परिभाषा

हिन्दी में शब्द की व्याख्या कई प्रकार से की जाती है। श्रोतव्य रूप के आधार पर यह व्याख्या स प्रकार होगी—

अक्षरों अथवा वर्णों के समुदाय विशेष को **शब्द** कहते हैं।

भाषा वैज्ञानिक शब्द को स्वतंत्र चरम वाक्य मानते हैं। व्याकरण की दृष्टि से स्वतंत्र तथा ध्वनि ही शब्द है।

संस्कृत में शब्द के लिय पद या पाद का प्रयोग भी होता है।

शब्द का महत्व

भाषा की दृष्टि से शब्द का बड़ा महत्व है। आदिम युग से लेकर अर्वाचीन युग तक व्यक्ति जो कुछ ज्ञान ग्रहण कर पाया है वह शब्दों के रूप में ही आज विश्व के सामने सचित तथा सुरक्षित है। भावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन शब्द ही है। वक्ता या लेखक अपने शब्दकोष क बल पर ही मैदान मार लेता है। शब्द भाषा के क्रमिक विकास की रूपरेखा है, लेखक की शक्ति है तथा व्याकरण और भाषा—विज्ञान का प्राण है। किसी भाषा का ज्ञान तब तक अधूरा है, जब तक उस भाषा में प्रयुक्त शब्दों का पूरा—पूरा ज्ञान न हो। किसी समाज अथवा राष्ट्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसकी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। यदि किसी भाषा की गंभीरता और हल्केपन का पता लगाना हो तो उसकी शब्दवली पर दृष्टि डालनी होगी। इन सभी बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा की निधि है।

1. Morphology of Hindi.

2. **महाभारत** के शान्तिपूर्ण में श्वेतकेतु द्वारा शब्द ही परिभाषा का उल्लेखक है: कल्पयेन च वर्णानाम परिवाद कृतो हि यः स शब्द इति विज्ञेय

अर्थात् वर्णों के आगे—पीछे जोड़ने से बोलने का जो प्रकार किया जाता है, वह शब्द होता है।

शब्दों के भेद

ध्वनि संबंधी भेद

ध्वनि की दृष्टि से शब्दों के दो भेद होते हैं—

(प) ध्यान्यात्मक शब्द

(पप) वर्णात्मक शब्द ।

जो शब्द स्पष्टतापूर्वक सुनाई नहीं देते और न स्पष्ट रूप ने समझ में ही आते हैं ऐसे शब्दों को ध्यान्यात्मक शब्द कहते हैं। जो शब्द प्रथक—प्रथक अक्षरों से प्रथक—प्रथक रूप से सुनाई देते हैं उन्हें वर्णात्मक शब्द कहते हैं। मानव—जीवनक की दृष्टिसे ध्यान्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का महत्व अधिक है।

अर्थ संबंधी भेद

अर्थ की दृष्टि से शब्दों के दो भेद किए जा सकते हैं—

(प) सार्थक शब्द

(पप) निरर्थक शब्द

साहित्यिक भाषा का संबंध केवल सार्थक शब्दों से ही रहता है, निरर्थक से नहीं। सार्थक शब्दों में भाव और विचार की एक प्रतिमा निहित रहती है। उन शब्दों के उच्चारण मात्र से प्रतिमा संस्कार उदबुद्ध उठते हैं।

शब्द—शक्तियाँ

शब्दों की तीन शक्तियाँ निर्धारित की गई हैं—

(प) अभिधा,

(पप) लक्षणा, तथा

(पपप) व्यंजना ।

जिस व्यक्ति के द्वारा शब्द के वाच्यर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा कहते हैं। वाचक शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(क) रूढ़ , (ख) यौगिक, (ग) योग रूढ़ ।

जिन शब्दों के खण्ड का कोई अर्थ न निकले, उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है यथा—श्याम जल पैसा आदि ।

यौगिक शब्दों का पूर्ण बोध उनके अवयवार्थ से होता है जैसे—राकेश यौगिक शब्द है। इसके दो अवयव रोका और ईश है । इसका अर्थ हुआ—राका (रात्रि) का स्वामी अर्थात्—चन्द्रमा

योग रूढ़ शब्दों में हमें यौगिक और रूढ़—दोनों ही शब्दों की शक्तियाँ का सम्मिश्रण प्राप्त होता है यथा—लम्बोदर शब्द का यौगिक अर्थ हुआ—लम्बे उदर वाला। परन्तु यह शब्द गणेश जी के

लिए यढ़ हो चुका है। लम्बोदर शुद्ध सुनते ही हमारे मन में गणेश जी का चित्र आ जाता है। पंकज तथा जलज शब्द भी योग—रूढ़ हैं।

जिस शक्ति के द्वारा लक्ष्यार्थ का बोध होता है, उसे लक्षणा कहते हैं यथा—मैं जयशंकर प्रसाद का अध्ययन कर रहा हूँ। इस वाक्य में जयशंकर से तात्पर्य—उनका साहित्य है। जिनका अध्ययन किया जा रहा है। यहाँ जयशंकर प्रसाद का साहित्य यह लक्ष्यार्थ है।

जिस शक्ति के द्वारा के व्यायार्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना कहते हैं जैसे यदि कोई कहे कि कल तुम्हारी कोठी में रात भर कुत्ता भोंकता रहा तो इसका व्यंगार्थ निकलता है कि शायद चोर आए हो इसलिए सावधानी की आवश्यकता है।

रूपान्तर के आधार पर शब्द भेद

रूपान्तर के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(प) विकारी,

(पप) अविकारी

जो शब्द लिंग कारक तथा वचन आदि के प्रभाव से अपना रूप परिवर्तित कर लेते हैं, उन्हें **विकारी** शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं— संज्ञा सर्वनाम विशेषण और क्रिया।

जिन शब्दों पर लिंग वचन तथा कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता उन्हें **अविकारी** शब्द कहते हैं अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते हैं—क्रिया विशेषण संबंध समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक।

शब्द—ज्ञान कैसे प्राप्त होता है।

शब्दों का ज्ञान हमें तीन प्रकार से प्राप्त होता है—

(प) उच्चारण करने से (पप) सुनने से (पपप) देखने से।

यद्यपि अपनी—अपनी जगह पर उच्चारण—ज्ञान श्रवण—ज्ञान तथा चक्षु—ज्ञान—इस —तीनों का महत्व है, परन्तु फिर भी चिन्तन का निखरा रूप उच्चारण—ज्ञान में ही माना जाता है।

हिन्दी की शब्द—सूची

हिन्दी की शब्द—सूची का हम तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

1. आर्य—भाषाओं से आए हुए शब्द,
2. प्रान्तीय भाषाओं से प्राप्त शब्द—समूह, तथा
3. विदेशी भाषाओं से आए हुए शब्द।

1. आर्य—भाषाओं से आये हुए शब्द

आर्य—भाषाओं से आए हुए शब्द अग्रांकित तीन प्रकार के हैं—

(प) **तत्सम**—जो शब्द संस्कृत से विशुद्ध रूप से अपना लिए गए हैं उन्हें तात्सम कहते हैं यथा—उषा अग्नि मित्र कृषि रात्रि, वायु, जगत, कर्म इत्यादि। गंभीर साहित्यिक में तत्सम शब्दों का ही अधिक

प्रयोग होता है। हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद महादेवी वर्मा, चतुरसेन शास्त्री आदि ने अपनी कृतियों में तत्सम शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया है।

(पप) अर्द्ध तत्सम—संस्कृत के जो शब्द प्राकृत-युग में अपना रूप बदल कर आज किसी में कुछ परिवर्तन के साथ प्रयोग में लाए जाते हैं उन्हें अर्द्ध-तत्सम कहा जाता है यथा—कारज (स.कार्य) पियरेम (स. प्रेम) अच्छर (स. अक्षर)

(पपप) तदभाव—जो शब्द सीखे संस्कृत से न लिए जाकर मध्यकालीन भाषाओं में से होते हुए आए हैं, ऐसे शब्दों को व्याकरण में तदभाव कहते हैं यथा—आग खेत काम आदि। मुन्शी प्रेमचन्द्र ने अपनी कहानियों उपन्यासों में तदभाव शब्दों का अधिक प्रयोग किया है।

उपयुक्त तीन प्रकार के शब्द हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

2. प्रान्तीय भाषाओं के शब्द

हिन्दी भाषी प्रदेशों तथा अन्य प्रान्तों में बराबर सम्पर्क रहा है। इस सम्पर्क के आधार पर हिन्दी ने अन्य प्रान्तीय भाषाओं के अनेक शब्दों को ग्रहण कर अपना कोश बढ़ाया है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं—

(प) बंगाल से आए शब्द—गल्प उपन्यास आदि ।

(पप) मराठी से आए शब्द—लागू, बाजू आदि ।

3. विदेशी भाषाओं से आए शब्द

भारतवर्ष पर मुसलमान तथा अंग्रेज—दो विदेशी जातियों का राज्य रहा । उनके सम्पर्क से हिन्दी में अरबी, फारसी तुर्की तथा अंग्रेजी पुर्तगाली भाषा से कई शब्द आये हैं।

इनके शब्दों मेंसे कुछ नीचे दिए जा रहे हैं—

(प) अरबी भाषा से आये शब्द—फुरसन, हकीम, हुक्म, सिफारिश, एतराज, अजनबी, मुकदमा, हिकमत, अदालत, हक, माल, असबाब इत्यादि ।

(पप) तुर्की भाषा से आये शब्द— बावर्ची, तोप, उर्दू तमगा, लाश, कुमुक, काबू, अलमारी, कालीन इत्यादि ।

(पपप) फारसी भाषा से आये शब्द— निशान, दोस्ती, फुरसत, दुकान, दमा, गुल, आदमी, शर्म होश, गुलकन्द, रास्ता, अरमान, दरबारी, कमर, चाकू, गुलेदान, शमा इत्यादि ।

(पअ) अंग्रेजी भाषा से आये शब्द—सिनेमा प्रेस,टिकिट, एसेम्बली, रेल, स्टेशन, पेन्सिल ,स्कूल, मास्टर, रजिस्टर, चेक, इंच, फुट, फंड, क्रिकेट, बालीवाल, पेन, पिन, स्टूल, रेडियो गामोफोन शर्ट आदि ।

3.4 शब्दकोष

शब्द — अक्षरों अथवा वर्णों के समुदाय विशेष को **शब्द** कहते हैं।

भाषा वैज्ञानिक शब्द को स्वतंत्र चरम वाक्य मानते हैं। व्याकरण की दृष्टि से स्वतंत्र ध्वनि ही शब्द है।

संस्कृत में शब्द के लिय पद या पाद का प्रयोग भी होता है।

शब्द का महत्व

भाषा की दृष्टि से शब्द का बड़ा महत्व है। आदिम युग से लेकर अर्वाचीन युग तक व्यक्ति जो कुछ ज्ञान ग्रहण कर पाया है वह शब्दों के रूप में ही आज विश्व के सामने संचित तथा सुरक्षित है। भावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन शब्द ही है वक्ता या लेखक अपने शब्दकोष के बल पर ही मैदान मार लेता है। शब्द भाषा के क्रमिक विकास की रूपरेखा है, लेखक की शक्ति है तथा व्याकरण और भाषा-विज्ञान का प्राण है। किसी भाषा का ज्ञान तब तक अधूरा है, जब तक उस भाषा में प्रयुक्त शब्दों का पूरा-पूरा ज्ञान न हो। किसी समाज अथवा राष्ट्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसकी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। यदि किसी भाषा की गंभीरता और हल्केपन का पता लगाना हो तो उसकी शब्दावली पर दृष्टि डालनी होगी। इन सभी बातों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शब्द भाषा की निधि है।

महाभारत के शान्तिपूर्ण में श्वेतकेतु द्वारा शब्द ही परिभाषा का उल्लेख है कल्पयेन च वर्णानाम परिवादकृतो हि यः स शब्द इति विज्ञेय अर्थात् वर्णों के आगे-पीछे जोड़ने से बोलने का जो प्रकार किया जाता है, वह शब्द होता है।

शब्दों के भेद

ध्वनि संबंधी भेद

ध्वनि की दृष्टि से शब्दों के दो भेद होते हैं—

(प) ध्वन्यात्मक शब्द

(पप) वर्णात्मक शब्द।

जो शब्द स्पष्टतापूर्वक सुनाई नहीं देते और न स्पष्ट रूप ने समझ में ही आते हैं ऐसे शब्दों को ध्वन्यात्मक शब्द कहते हैं। जो शब्द प्रथक—प्रथक अक्षरों से प्रथक—प्रथक रूप से सुनाई देते हैं उन्हें वर्णात्मक शब्द कहते हैं। मानव—जीवन की दृष्टि से ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का महत्व अधिक है।

अर्थ संबंधी भेद

अर्थ की दृष्टि से शब्दों के दो भेद किए जा सकते हैं—

(प) सार्थक शब्द

(पप) निरर्थक शब्द

साहित्यिक भाषा का संबंध केवल सार्थक शब्दों से ही रहता है, निरर्थक से नहीं। सार्थक शब्दों में भाव और विचार की एक प्रतिमा निहित रहती है। उन शब्दों के उच्चारण मात्र से प्रतिमा के संस्कार उदबुद्ध हो उठते हैं।

शब्द—शक्तियाँ

शब्दों की तीन शक्तियाँ निर्धारित की गई हैं—

(प) अभिधा,

(पप) लक्षणा, तथा

(पपप) व्यंजना।

जिस व्यक्ति के द्वारा शब्द के वाच्यार्थ का बोध होता है, उसे अभिधा कहते हैं। वाचक शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(क) रुढ़ , (ख) यौगिक, (ग) योग रुढ़।

जिन शब्दों के खण्ड का कोई अर्थ न निकले, उन्हें रुढ़ शब्द कहा जाता है यथा—श्याम, जल, पैसा आदि।

यौगिक शब्दों का पूर्ण बोध उनके अवयवार्थ से होता है जैसे—राकेश यौगिक शब्द है। इसके दो अवयव राका और ईश है। इसका अर्थ हुआ—राका (रात्रि) का स्वामी अर्थात्—चन्द्रमा।

योग रूढ़ शब्दों में हमें यौगिक और रूढ़—दोनों ही शब्दों की शक्तियों का सम्मिश्रण प्राप्त होता है यथा—लम्बोदर शब्द का यौगिक अर्थ हुआ—लम्बे उदर वाला। परन्तु यह शब्द गणेश जी के लिए रूढ़ हो चुका है। लम्बोदर शब्द सुनते ही हमारे मन में गणेश जी का चित्र आ जाता है। पंकज तथा जलज शब्द भी योग—रूढ़ हैं।

जिस शक्ति के द्वारा लक्ष्यार्थ का बोध होता है, उसे लक्षणा कहते हैं यथा— मैं जयशंकर प्रसाद का अध्ययन कर रहा हूँ। इस वाक्य में जयशंकर से तात्पर्य—उनका साहित्य है। जिनका अध्ययन किया जा रहा है। यहाँ जयशंकर प्रसाद का साहित्य यह लक्ष्यार्थ है।

जिस शक्ति के द्वारा व्यंग्यार्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना कहते हैं जैसे यदि कोई कहे कि कल तुम्हारी कोठी में रात भर कुत्ता भोंकता रहा तो इसका व्यंग्यार्थ निकलता है, कि शायद चोर गए हों इसलिए सावधानी की आवश्यकता है।

रूपान्तर के आधार पर शब्द — भेद

रूपान्तर के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(प) विकारी,

(पप) अविकारी

जो शब्द लिंग, कारक तथा वचन आदि के प्रभाव से अपना रूप परिवर्तित कर लेते हैं, उन्हें **विकारी** शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

जिन शब्दों पर लिंग, वचन तथा कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, उन्हें **अविकारी** शब्द कहते हैं अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते हैं—क्रिया विशेषण, संबंध, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक।

शब्द-ज्ञान कैसे प्राप्त होता है।

शब्दों का ज्ञान हमें तीन प्रकार से प्राप्त होता है—

(प) उच्चारण करने से (पप) सुनने से (पपप) देखने से।

यद्यपि अपनी-अपनी जगह पर उच्चारण-ज्ञान, श्रवण-ज्ञान तथा चक्षु-ज्ञान-इन तीनों का महत्व है, परन्तु फिर भी चिन्तन का निखरा रूप उच्चारण-ज्ञान में ही माना जाता है।

हिन्दी की शब्द-सूची

हिन्दी की शब्द-सूची को हम तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

4. आर्य-भाषाओं से आए हुए शब्द,
5. प्रान्तीय भाषाओं से प्राप्त शब्द-समूह, तथा
6. विदेशी भाषाओं से आए हुए शब्द।

4. आर्य-भाषाओं से आये हुए शब्द

आर्य-भाषाओं से आए हुए शब्द अग्रांकित तीन प्रकार के हैं—

(प) **तत्सम**—जो शब्द संस्कृत से विशुद्ध रूप से अपना लिए गए हैं उन्हें तत्सम कहते हैं यथा—उषा, अग्नि, मित्र, कृषि, रात्रि, वायु, जगत, कर्म इत्यादि। गंभीर साहित्य में तत्सम शब्दों का ही अधिक प्रयोग होता है। हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, चतुरसेन शास्त्री आदि ने अपनी कृतियों में तत्सम शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया है।

(पप) **अर्द्ध तत्सम**—संस्कृत के जो शब्द प्राकृत-युग में अपना रूप बदल कर आज किसी में कुछ परिवर्तन के साथ प्रयोग में लाए जाते हैं उन्हें अर्द्ध-तत्सम कहा जाता है यथा—कारज (स.कार्य) पिरेम (स. प्रेम) अच्छर (स. अक्षर)

(पपप) **तदभव**—जो शब्द सीधे संस्कृत से न लिए जाकर मध्यकालीन भाषाओं में से होते हुए आए हैं, ऐसे शब्दों को व्याकरण में तदभव कहते हैं यथा—आग, खेत, काम आदि। मुन्शी प्रेमचन्द्र ने अपनी कहानियों, उपन्यासों में तदभव शब्दों का अधिक प्रयोग किया है।

उपयुक्त तीन प्रकार के शब्द हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

5. प्रान्तीय भाषाओं के शब्द

हिन्दी भाषी प्रदेशों तथा अन्य प्रान्तों में बराबर सम्पर्क रहा है। इस सम्पर्क के आधार पर हिन्दी ने अन्य प्रान्तीय भाषाओं के अनेक शब्दों को ग्रहण कर अपना कोश बढ़ाया है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं—

(प) बंगाल से आए शब्द—गल्प, उपन्यास आदि ।

(पप) मराठी से आए शब्द—लागू, बाजू आदि ।

6. विदेशी भाषाओं से आए शब्द

भारतवर्ष पर मुसलमान तथा अंग्रेज —दो विदेशी जातियों का राज्य रहा। उनके सम्पर्क से हिन्दी में अरबी, फारसी, तुर्की तथा अंग्रेजी पुर्तगाली भाषा से कई शब्द आये हैं।

इनके शब्दों में से कुछ नीचे दिए जा रहे हैं—

(प) अरबी भाषा से आये शब्द—फुरसत, हकीम, हुक्म, सिफारिश, एतराज, अजनबी, मुकदमा, हिकमत, अदालत, हक, माल —असबाब इत्यादि ।

(पप) तुर्की भाषा से आये शब्द— बावर्ची, तोप, उर्दू तमगा, लाश, कुमुक, काबू, अलमारी, कालीन इत्यादि ।

(पपप) फारसी भाषा से आये शब्द— निशान, दोस्ती, फुरसत, दुकान, दमा, गुल, आदमी, शर्म, होश, गुलकन्द, रास्ता, अरमान, दरबारी, कमर, चाकू, गुलेदान, शमा इत्यादि ।

(पअ) अंग्रेजी भाषा से आये शब्द—सिनेमा प्रेस, टिकिट, एसेम्बली, रेल, स्टेशन, पेन्सिल, स्कूल, मास्टर, रजिस्टर, चेक, इंच, फुट, फंड, क्रिकेट, बालीवाल, पेन, पिन, स्टूल, रेडियो, ग्रामोफोन, शर्ट आदि ।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 3.1

तत्सम, अर्द्ध तत्सम, तदभव शब्दों के पॉच—पॉच

उदाहरण लिखो –

स क्र.	तत्सम	अर्द्ध तत्सम	तदभव
1	मित्र	अच्छर	आग
2			
3			
4			
5			
6			

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न— शब्द का क्या महत्व है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

